सृजन

संस्करण–३

(2018-19)

राजीव गाँधी नवोदय विद्यालय

स्यात, कोटाबाग(नैनीताल)

उत्तराखंड

विद्यालय अकादमिक स्टाफ

बैठे हुये बांये से–कु0 शालिनी सिंह,कु0रुपाली प्रसाद, श्री मुकुल कुमार पाल,श्री अभिजात अजात शत्रु सिंह रावत, श्री भाष्करानंद पांडेय(प्राचार्य) ,
श्री जगदीश चंद्र पांडेय, श्रीमती दिशा त्रिपाठी, कु0ज्योति पाठक,श्रीमती चेतना कांडपाल
पंक्ति में बांये से–श्री राजीव सक्सेना,श्री दिनेश जोशी, श्री भीम सिंह सुरकाली,श्री हेम चंद्र चौधरी, श्री संजय रावत,श्री ललित जोशी,श्री विनायक भट्ट,
श्री कमान राम लोहिया.श्री मनोज देवराडी. श्री संजय शर्मा.श्री विशाल रावत. श्री रमेश चंद्र सनवाल

विद्यालय शिक्षणेत्तर स्टाफ

बैठे हुये बांये से–कु0 रमा नेगी,कु0रुपाली प्रसाद, श्रीमती चेतना कांडपाल,,श्री अभिजात अजात शत्रु सिंह रावत, श्री भाष्करानंद पांडेय(प्राचार्य),
श्री जगदीश चंद्र पांडेय,श्रीमती दिशा त्रिपाठी, कु0 शालिनी सिंह, कु0ज्योति पाठक,
पंक्ति में बांये से–श्री राजेन्द्र सिंह (लिपिक),श्री के0के0गोला,श्री कुंदन सिंह कपकोटी,श्री भवान सिंह,श्रीमती सुनीता,श्री मदन, श्री भुवन चंद्र

सृजन

राजीव गाँधी नवोदय विद्यालय
स्यात, कोटाबाग (नैनीताल)

वार्षिक पत्रिका

तृतीय अंक

2018-19

‘हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए’

‘सृजन’

तृतीय संस्करण 2018-19

संरक्षक
श्री कमलेश कुमार गुप्ता
मुख्य शिक्षा अधिकारी
(नैनीताल)

राजीव गाँधी नवोदय विद्यालय स्यात कोटाबाग, नैनीताल (उत्तराखंड)

'सृजन'

तृतीय संस्करण 2018-19

राजीव गाँधी नवोदय विद्यालय स्यात, कोटाबाग
नैनीताल (उत्तराखंड)

संरक्षक- श्री कमलेश कुमार गुप्ता
मुख्य शिक्षा अधिकारी
(नैनीताल)

संपादक मंडल- श्री जगदीश चंद्र पांडेय
श्री राजीव सक्सेना
श्री विशाल मुंजाल
श्री रमेश चंद्र सनवाल

संदेश

अरविन्द पाण्डेय
मंत्री
विद्यालयी शिक्षा, प्रौढ शिक्षा,
संस्कृत शिक्षा, खेल युवा कल्याण
एवं पंचायती राज

उत्तराखण्ड शासन

विधान भवन
देहरादून-248001
दूरभाष : 0135-2665080 (का.)
फैक्स : 0135-2665121

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि राजीव गांधी नवोदय विद्यालय स्यात, कोटाबाग (नैनीताल) अपनी पत्रिका "**सृजन**" के "**तृतीय अंक**" का प्रकाशन करने जा रहा है।

मुझे आशा है कि उक्त पत्रिका "**सृजन**" के "**तृतीय अंक**" में शैक्षिणिक गतिविधियों, विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की स्वरचित कविताएं, कहानियां, प्रेरणादायक लेख एवं चित्रकला आदि का उल्लेख किया जायेगा। जिसके पढ़ने से छात्र–छात्राएं जागरूक होंगे और उनमें नई चेतना एवं ऊर्जा का संचार होगा तथा समाज में जनमानस को भी अच्छा सन्देश जायेगा।

मैं राजीव गांधी नवोदय विद्यालय स्यात, कोटाबाग (नैनीताल) के द्वारा प्रकाशित होने वाली पत्रिका "**सृजन**" के "**तृतीय अंक**" के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

(अरविन्द पाण्डेय)

संदेश

सविन बंसल
आई० ए० एस०

जिलाधिकारी
जिला–नैनीताल

संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष हो रहा है कि राजीव गांधी नवोदय विद्यालय स्यात, कोटाबाग (नैनीताल) अपने विद्यालय की वार्षिक पत्रिका **'सृजन'** तृतीय अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। मेरी अपेक्षा है कि पत्रिका छात्र–छात्राओं के सर्वांगीण विकास का दर्पण बनकर भावी छात्र–छात्राओं के लिए रचनात्मकता एवं प्रेरणा का स्रोत बनेगी।

पत्रिका प्रकाशन के उद्देश्यों की सफलता के लिए मेरी शुभकामनाएं।

सविन बंसल
जिलाधिकारी नैनीताल

संदेश

सीमा जौनसारी
पी०ई०एस०

निदेशक
अकादमिक शोध एवं प्रशिक्षण
विद्यालयी शिक्षा उत्तराखण्ड, देहरादून

संदेश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि राजीव गांधी नवोदय विद्यालय स्यात, कोटाबाग जिला नैनीताल अपने विद्यालयी पत्रिका **"सृजन"** तृतीय अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। विद्यालयी पत्रिका रचनात्मक गतिविधि, नूतन आकांक्षाओं एवं नवाचारी प्रयोगों की सफलतम मंजूषा होती है जो उन्हें वास्तविक जीवन से जोड़ने का कार्य करती है।

विद्यालयी पत्रिका सृजन समस्त आयामों को पूर्ण कर अपने उद्देश्यों की विवरणिका बनेगी तथा भावी छात्र–छात्राओं का मार्ग प्रशस्त करेगी।

विद्यालयी पत्रिका के रचनात्मक प्रकाशन हेतु विद्यालय के प्राचार्य, सम्पादक मण्डल एवं छात्र–छात्राओं को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

5/7/19
सीमा जौनसारी

संदेश

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
CENTRAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

F. CBSE/RO/DDN/PS-/2019 Dt. 30/04/2019

MESSAGE

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूं पांय।
बलिहारी गुरु अपने, गोविन्द दियो बताय।।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुरेव परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥१॥

"बेटियों को बेहतर शिक्षा प्राप्त हो, की अपेक्षा"

It gives me immense pleasure to extend my sincerest wishes to the Management, Principal, Staffs and Students of Rajeev Gandhi Navodaya Vidyalaya, Distt. Nainital, Uttarakhand on the occasion of release of *THE THIRD PART OF MEGAZINE 'SRIJAN'*

It should be the constant endeavor of a school to provide an education which is better suited to the needs of the modern world than fact-based learning. Schools should aim at offering an unparalleled combination of academics, sports, arts and values among students.

It is heartening to see that Rajeev Gandhi Navodaya Vidyalaya, Distt. Nainital, Uttarakhand has always tried to respond to the needs of the society by equipping its students with confidence, discipline and clarity of thought, decision making ability to act and achieve their goals so that they go out into the world to make a difference through their value based lives. Rajeev Gandhi Navodaya Vidyalaya with its never ending dedication, has made a remarkable progress and today it occupies a place of eminence amongst the institutions of the District, under the proficient leadership of the Principal. Education is all about creating new experiences, thus *THE THIRD PART OF MEGAZINE 'SRIJAN'* would surely be an exciting congruence with the National focus on bringing Women to the fore front.

I wish all the very best to one and all in the school especially the Editorial Team and do hope that the school will continue to grow in its strength and stature in times to come.

With best wishes!

Ranbeer Singh
Regional Officer
CBSE, RO – Dehradun

THE PRINCIPAL
RAJEEV GANDHI NAVODAYA VIDYALAYA
SYAT, KOTABAGH
DISTT. NAINITAL
UTTARAKHAND

क्षेत्रीय कार्यालय - देहरादून, 99, कौलागढ रोड, देहरादून, उत्तराखण्ड – 248001
Regional Office - Dehradun, 99, Kaulagarh Road, Dehradun, Uttarakhand – 248001
Phone: 0135-2757744 / 0135-2757766. Fax : 0135-2757733
Email – roddn@cbse.gov.in, roddn.cbse@gmail.com.

संदेश

बन्दना गर्ब्याल
अपर निदेशक

महानिदेशालय
विद्यालयी शिक्षा उत्तराखण्ड
ननूरखेड़ा, तपोवन मार्ग, देहरादून
☎: 0135 2780140

दिनांक 02-07-2019

संदेश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि राजीव गांधी नवोदय विद्यालय स्यात, कोटाबाग; जिला नैनीताल द्वारा विद्यालय पत्रिका "**सृजन**" का तृतीय संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। विद्यालय पत्रिका छात्र–छात्राओं के सर्वांगीण विकास, शैक्षिक उन्नयन एवं अभिव्यक्ति को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम होती है।

मुझे आशा है कि आपके कुशल निर्देशन में प्रकाशित की जा रही विद्यालय पत्रिका "**सृजन**" जनमानस को अभिप्रेरित करेगी और छात्र–छात्राओं में सृजनात्मक कौशल का विकास होगा।

पत्रिका के प्रकाशन के लिये हार्दिक शुभकामनाऐं।

भवदीया

(बन्दना गर्ब्याल)

प्राचार्य
रा0गां0न0वि0 कोटाबाग,
नैनीताल

संदेश

डॉ० मुकुल कुमार सती
पी०ई०एस०

मंडलीय अपर निदेशक
माध्यमिक शिक्षा
कुमाऊँ मंडल, नैनीताल

संदेश

यह जानकर अत्यधिक प्रसंन्नता हो रही है कि राजीव गांधी नवोदय विद्यालय स्यात कोटाबाग नैनीताल द्वारा वार्षिक पत्रिका **'सृजन'** तृतीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका का प्रकाशन विद्यालयी छात्र-छात्राओं में आवासीय विद्यालय के अध्येय के साथ-साथ रचनात्मक गतिविधि, सहगामी क्रियाकलाप तथा भावी छात्र छात्राओं के पथ प्रदर्शन में सहायक होगा।

विद्यालय की वार्षिक पत्रिका **'सृजन'** के सफल संचालन हेतु शुभकामनाएं।

डॉ0 मुकुल कुमार सती

संदेश

कमलेश कुमार गुप्ता
पी0ई0एस0

मुख्य शिक्षा अधिकारी
जिला-नैनीताल

संदेश

राजीव गांधी नवोदय विद्यालय स्यात कोटाबाग नैनीताल की वार्षिक पत्रिका 'सृजन' तृतीय अंक के प्रकाशन स्वरुप विद्यालय परिवार को बधाई देता हूँ, तथा आशा करता हूँ कि पत्रिका नए क्लेवर के साथ विद्यालय का दर्पण बनकर रचनात्मक गतिविधि पाठ्येत्तर कियाकलापों तथा आवासीय विद्यालय के दायित्वों की अनुकमणिका सिद्ध होगी जिसके भावी छात्र–छात्रायें अनुगामी बनेंगे।

वार्षिक पत्रिका 'सृजन' के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

कमलेश कुमार गुप्ता

संदेश

हीरा लाल गौतम
पी0ई0एस0

जिला शिक्षा अधिकारी(माध्यमिक)
जिला-नैनीताल

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि राजीव गांधी नवोदय विद्यालय स्यात, कोटाबाग जिला नैनीताल अपने विद्यालयी पत्रिका **"सृजन"** तृतीय अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। पत्रिका प्रकाशन नवोदयी जीवन की गतिविधि,शैक्षणिक किया–कलाप तथा सर्वांगीण विकास के विभिन्न मापदंडों को प्रस्तुत करने में अपना सकिय योगदान देने के साथ–साथ वर्तमान एवं भवष्यि के लिए पथ पदर्शक का कार्य करेगी।

विद्यालयी पत्रिका के प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल एवं छात्र–छात्राओं को मेरा सप्रेम स्नेह।

हीरा लाल गौतम

प्राचार्य की कलम से .....

राजीव गांधी नवोदय विद्यालयों की स्थापना नई शिक्षा नीति १९८६ की उस संकल्पना के साथ हुई जिसके अन्तर्गत केन्द्र सरकार द्वारा भारत के प्रत्येक जनपद में जवाहर नवोदय विद्यालय खोले गए हैं। इसी तर्ज पर ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को उत्तम एवं गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए, उनमें आत्मनिर्भरता की भावना का विकास करने के लिए, रोजगार के अवसरों के अनुरूप शिक्षा प्रदान करने के लिए, पर्यावरण के प्रति पर्याप्त जागरूकता पैदा करने के लिए तथा राष्ट्र की सेवा में उच्च स्तरों पर महत्वपूर्ण दायित्वों के निर्वहन हेतु दक्षता प्राप्त करने में सक्षम बनाने के लिए उत्तराखंड सरकार द्वारा राजीव गांधी नवोदय विद्यालयों को प्रतिभा केन्द्र के रूप में स्थापित किया गया ।

राजीव गांधी नवोदय विद्यालय स्यात् कोटाबाग (नैनीताल) की स्थापना २० अक्टूबर २००४ को हुई। प्रारंभ में विद्यालय अत्यन्त सीमित संसाधनों के बीच आरंभ हुआ जब कक्षाएं राजकीय बालिका इंटर कालेज कोटाबाग में संचालित होती थी । रहने एवं खाने की व्यवस्था प्राथमिक विद्यालय कोटाबाग पूर्ति विभाग के गोदाम एवं अस्पताल परिसर में थी । इन स्थानों के बीच आने जाने में बच्चों की सुरक्षा एक बड़ी चुनौती थी जिसका विद्यालय के संस्थापक अध्यापकों एवं बच्चों द्वारा बखूबी सामना किया गया और इससे पार पाने में सफल रहे। जुलाई २००८ में जब कार्यदायी संस्था ग्रामीण अभियन्त्रण सेवा द्वारा प्रथम चरण के भवनों का निर्माण कार्य पूरा हुआ तब विद्यालय को वर्तमान स्थान पर स्थानान्तरित किया गया। वर्ष २०१६ में द्वितीय चरण का निर्माण कार्य पूर्ण होने के उपरान्त प्रत्येक छात्र को उसके लिये पर्याप्त आवास एवं विद्यालय में साजो सामान को रखने हेतु अतिरिक्त कक्षों की सुविधा मिल रही है ।

विगत पंद्रह वर्षों में विद्यालय ने प्रत्येक क्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगति की है शिक्षा के साथ-साथ खेलकूद और पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों में निरंतर नये मानदंड स्थापित किये हैं। विद्यालय के अनेक छात्र आज सार्वजनिक सेवाओं यथा चिकित्सा, अभियांत्रिकी, सेना, पुलिस,राज्य व केन्द्र में महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों इत्यादि में प्रतिष्ठित पदों पर सेवाऐं दे रहे हैं। निस्संदेह ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों के लिए यह बड़ी उपलब्धियां हैं और विद्यालय परिवार को विश्वास है कि भविष्य में विद्यालय सफलताओं के नये आयाम स्थापित करेगा।

विद्यालय केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से संबद्ध है तथा इसमें ६ से १२ तक की सभी कक्षाएं संचालित हैं। जिनमें वर्तमान में १६७ छात्र तथा १८६ छात्राएं कुल ३५३ बच्चे अध्ययनरत् हैं। विद्यालय में अभी विज्ञान,वाणिज्य एवं कला वर्ग की कक्षाएं संचालित होती हैं विद्यालय में हिन्दी और अंग्रेजी दोनों

माध्यमों में शिक्षा प्रदान की जाती है, जिस हेतु १० प्रवक्ता तथा ०८ स० अध्यापक कार्यरत हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षणेत्तर कर्मी के रूप में ०१ कनिष्ठ लिपिक, ०९ पी०आर०डी० अभिकर्मी,०१ नर्स,०१ लैब सहायक तैनात हैं जो विद्यालय की विभिन्न व्यवस्थाओं को देखते हैं तथा इसके अतिरिक्त विद्यालय प्रबन्ध समिति द्वारा वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में ०१ अतिरिक्त स्वच्छक व ०२ कर्मियों की व्यवस्था छात्र/छात्राओं की वस्त्र धुलाई हेतु की गयी है। वर्ष २०१८-१९ में विद्यालय की हाईस्कूल परीक्षा का परिणाम शत-प्रतिशत तथा इंटरमीडिएट परीक्षा का परिणाम ८७.२% रहा। वर्ष २०१८-१९ में कक्षा ६ से ९ तथा ११ का परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा है।

विद्यालय के छात्र-छात्राओं का खेलकूद के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन वर्तमान सत्र में भी जारी रहा, सीमित संसाधनों के बावजूद राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में क्रिकेट में ०१, टेबल टेनिस में ०९, बैडमिंटन में ०९, तथा हैण्डबाल में १६ बच्चों एवं बॉस्केटबॉल में ०२ बच्चों ने प्रतिभाग किया। राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में बेहतरीन प्रदर्शन के दम पर राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में अब तक टेबल टेनिस में ०२, तथा हैण्डबाल में ०१ छात्र का चयन हो चुका है और यह सिलसिला जारी है । विद्यालय में १५ दिसम्बर २०१९ को जिला टेनिस ऐसोशिएशन नैनीताल के सहयोग से लॉन टेनिस खेल की भी शुरुआत की गयी है, जिसे विद्यार्थी बहुत ही उत्साहजनक रुप से सीख रहे हैं ।

विद्यालय के वार्षिक कलैण्डर के अनुरूप विभिन्न पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों में भी छात्रों का प्रदर्शन सराहनीय रहा है। ब्लाक स्तरीय सामान्य क्विज एवं विज्ञान क्विज प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने के उपरान्त विद्यार्थियों ने जनपद स्तरीय एवं राज्य स्तरीय विज्ञान क्विज प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया । भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय की ओर से प्रायोजित इंस्पायर अवार्ड में इस सत्र में विद्यालय से कक्षा १० की छात्रा गुंजन महरा का चयन हुआ है । उरेडा द्वारा विद्यालय की दो छात्राओं कुसुम रुवाली तथा भूमिका बुढ़लाकोटी का चयन उर्जा मित्र के रुप में किया गया है तथा इन बालिकाओं द्वारा राज्य स्तर पर आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभाग किया गया । विद्यालय स्तर पर प्रत्येक बुधवार व अन्य विशेष दिवसों पर अर्न्तसदनीय प्रतियोगिताऐं आयोजित की जाती है । जिसमें सुलेख, काव्य पाठ प्रतियोगिता, निबंध-लेखन, चित्रकला, भाषण,समूह चर्चा,नृत्य,गायन,प्रश्न-मंच इत्यादि आयोजन से भविष्य में आने वाली प्रतियोगिता हेतु बौद्धिक क्षमता के साथ तैयार हो रहे हैं । विद्यालय द्वारा क्विज हेतु विकसित पॉवरपाइन्ट प्रेजेन्टेशन की पूरे प्रदेश में सराहना हुई है ।विद्यालय समय-समय पर विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्तियों को आमंत्रित करता रहा है, ताकि उनसे संवाद कर छात्र-छात्राएं उनके व्यक्तित्व से परिचित होकर उनके कार्यों से प्रेरणा ले सकें । इसी क्रम में विद्यालय ने पैदल चाल स्पर्धा के ओलम्पियन श्री

गुरमीत सिंह, जनकवि श्री बल्ली सिंह चीमा एवं हिन्दी के क्षेत्र में प्रख्यात कवि श्री नरेश सक्सेना जी को विद्यालय में आमंत्रित किया । विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुरुप अपने कैरियर का चुनाव कर सकें, इस हेतु समय-समय पर अपने क्षेत्रों में कामयाब व्यक्तियों को इस निमित्त आमंत्रित कर उनके मार्गदर्शन एवं परामर्श की व्यवस्था की जाती है ताकि छात्र अपने भविष्य की समुचित दशा एवं दिशा तय कर सकें।प्रातः कालीन व्यायाम और योगाभ्यास से आरम्भ हुई दिनचर्या शिक्षण कक्षाओं, खेलकूद तथा उपचारात्मक शिक्षण/निर्दिष्ट कक्षाओं के उपरान्त स्वाध्याय से समाप्ति पर पहुँचती है। समूह में सीखने के अधिक अवसर प्राप्त होने के साथ उचित नैतिक मूल्यों का विकास होने पर हमारा यह विश्वास है कि इस विद्यालय में शिक्षा ग्रहण कर रहा प्रत्येक विद्यार्थी देश का एक आदर्श नागरिक बनकर न केवल समाज की सेवा करेगा बल्कि अन्य के लिये एक प्रेरणास्रोत भी बनेगा।

वर्तमान में विद्यालय के सामने अनेक चुनौतियां भी हैं। जंगल से लगा होने के कारण हमेशा जंगली जानवरों का भय बना रहता है। अतः सोलर फेंसिग की नितान्त आवश्यकता महसूस होती है। विद्यालय में स्थापित सोलर वाटर गीजर संयत्र पानी में अत्यधिक चूने की मात्रा होने के कारण अवरूद्ध हो चुका है । बन्दरों के आतंक के कारण अधिकतर सोलर लाईटें खराब हो चुकी हैं। विद्यालय का प्रशासनिक भवन, अकादमिक भवन एवं स्टाफ क्वार्टरों का अनुरक्षण कार्य लम्बित है। विद्यालय में प्राचार्य,उपप्राचार्य,०१पी०जी०टी०, ०६ टी०जी०टी०,०२ मैट्रन तथा ०२ कार्यालय सहायकों के पद रिक्त हैं । विद्यालय की सबसे बड़ी आवश्यकता बहुउद्देशीय हाल की स्थापना अद्यतन नहीं हो पायी है जिससे छात्र/छात्राओं के सामूहिक कार्यक्रम तथा इण्डोर खेलों का आयोजन सुगमता के साथ नहीं हो पाता है। उक्त सभी समस्याओं के समाधान हेतु विभाग को समय-समय पर पत्राचार किया गया है और हम आशान्वित हैं कि शीघ्र ही शासन स्तर से समस्याओं का निदान संभव हो सकेगा। विद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष माननीय जिलाधिकारी महोदय नैनीताल द्वारा मनरेगा से विद्यालय के आंतरिक सम्पर्क मार्ग की स्वीकृति के साथ-साथ सोलर वाटर गीजर संयंत्र की मरम्मत हेतु जिला योजना से स्वीकृति प्रदान की गयी है । विद्यालय की फर्नीचर की आवश्यकता की पूर्ति एवं मरम्मत कार्य हेतु सी०एस०आर० परियोजना के अन्तर्गत ओ०एन०जी०सी० को प्रस्ताव भेजे गये हैं ।

विद्यालय के समस्त छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु पूरा विद्यालय परिवार कटिबद्ध है ।

सभी के सुखी एवं सफल भविष्य की शुभकामनाओं सहित शुभांकाक्षी.....

भाष्करानंद पांडे
खंड शिक्षा अधिकारी कोटाबाग /
प्र०प्राचार्य रा०गा०न०वि०नैनीताल

संपादकीय.....

एक बरस में एक बार ही, जलती होली की ज्वाला
एक बार ही लगती बाजी, जलती दीपों की माला ।

'सृजन' पत्रिका के तृतीय संस्करण को सजाने-सवारने में अपना योगदान देने वाले विद्यालय के यशस्वी प्राचार्य श्रीयुत भाष्करानंद पांडेय जी का संपादक मंडल कृतज्ञता ज्ञापित करता है जिनके असीम सहयोग से विद्यालयी परंपरा की गौरव-गाथा पत्रिका में नये विचार बनकर पल्लवित,पुष्पित हुई है ।पत्रिका नये मापदंडों के साथ छात्र-छात्राओं के नूतन विचारों को संवर्द्धन प्रदान करने के साथ नई पहचान दिलाने में सहायक होगी ।पत्रिका को संपादक मंडल के समस्त सहयोगी विद्वतजनों द्वारा सिंचित करने का सुष्ठु प्रयास किया गया है, जिससे विद्यालयी परम्परा एवं इतिहास की समझ आसान हो सके ।

विद्यालय में निहित सर्वांगीण विकास से सबंधित समस्त गतिविधियों के रेखांकन के लिए मंच की आवश्यकता होती है। यहाँ सृजन पत्रिका ने दीपक बनकर अपने आलोक में विद्यालय में पल्लवित पुष्पित ज्ञानपुंज को संग्रहित करने की भूमिका प्रदत्त की। समकालीन समय में पत्रिका जैसी अनूठी साहित्य की प्रासंगिकता अधिक हो जाती है,जब लोग वास्तविक लेखन से दूर जाकर यांत्रिकता का सहारा ले रहे हैं। यह युग के लिए विडम्बना की बात है कि जिस लेखन द्वारा अमूल्य साहित्य रचना-संसार बनकर मनुष्यों को पाप-पुण्य,तर्क-वितर्क,ज्ञान-विज्ञान का सार्वकालिक साधन सिद्व हुई , वहीं आज अस्मिता के लिए मुँह बाहें खड़ी हैं ।सृजन पत्रिका के संस्करण को अविरल रुप देने का ध्येय है कि हम अपने नौनिहालों के यांत्रिक जीवन की शिक्षा को रचनात्मक गतिविधि व लेखन के साथ सायुज्य कर उन्हें मापदंडों के साथ स्थापित करें । पत्रिका में यह पहल भागती हुई जीवनशैली को कुछ अवकाश देने के लिए भविष्य में सफलतम सिद्व होगी,क्योंकि बाल यौवन से जुड़ने वाली गतिविधि चिरकाल तक परछाई स्वरुप प्रतीत होगी । छात्र-छात्राओं को वास्तविक एवं रचनात्मक जीवन की प्रतीति कराना शिक्षक का दायित्व होता है जिससे वह समाज का आईना बनकर उनके बारे में सोच समझ सके।

'सृजन' पत्रिका का तृतीय संस्करण अपने वातावरण में नवोदयी रचना-संसार की गंभीरता के साथ दैनिक गतिविधि, आलोकमय शैक्षिक-परिवेश,वैज्ञानिक सूझ-बूझ,क्रीड़ा,अनुशासित जीवन एवं भौतिक संसाधनों को समेटे हुए है ।नवोदयी नर्सरी में संरक्षित ज्ञान-पिपासकों की समस्त क्रियाकलापों को समवेत

मंच देते हुए हमारा आद्यांत लक्ष्य अलबेले संसार की स्पर्द्धा से है, जिसके लिए इसकी नींव कल्पित की गई है। इस कल्पित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए रचनात्मक गतिविधियों एवं शैक्षिक उत्कृष्टता के आधार पर उनके मानस-पटल पर अंकित बौद्धिक अनुसंधान को लेखन-आवरण से आच्छादित किया गया है।

इस पत्रिका में छात्र-छात्राओं के लेखन तथा कला-चित्रण द्वारा उनकी सामाजिक सोच एवं गहन बिम्बों को सुन्दर रुप दिलाने का प्रयास किया गया है। इन्हीं स्वर्णिम बिन्दुओं को मंच दिलाना ही संपादक मंडल का ध्येय है।

संपादक मंडल, प्राचार्य महोदय तथा पत्रिका को टंकण रुप प्रदान करने वाले मुद्रक के प्रति श्रद्धानवत् हैं जिनके प्रयासों से पत्रिका ने नये आयामों को स्थापित किया है।

संपादक मंडल
राजीव गाँधी नवोदय विद्यालय स्यात
कोटाबाग, नैनीताल

'दो शब्द'.....

चलने ही चलने में कितना, जीवन हाय बिता डाला
'दूर अभी है', पर कहता है, हर पथ बतलाने वाला।

ज्ञान रुपी दीपक को प्रज्वलित करने वाली मां सरस्वती की यह पुण्य स्थली 'स्यात' नाम की अर्थवता के साथ विद्या केन्द्र के रुप में राजीव गांधी नवोदय विद्यालय स्यात कोटाबाग द्वितीय श्रावण मास शुक्ल पक्ष अष्टमी तिथि,संवत् २०६१ दिनांक २३ अगस्त २००४ ई० को जनपद नैनीताल विकासखंड कोटाबाग की भूमि में अस्तित्व की साक्षी बनी।अस्तित्व काल से संस्थान अपनी अविरलता की कहानी का आभास कराकर यहाँ के नौनिहालों को तराश रही है।

पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान का वाहक बनकर मां सरस्वती के प्रागण में नवोदयी विचारधारा की दीप प्रजवलित करने वाले मनुष्यों ने अहर्निशसेवा भाव से संस्थान को पहचान दिलाने का महती कार्य किया। वर्तमान समय में संस्थान का कल्प वृक्ष बनकर श्री भाष्करानंद पांडेय जी प्राचार्य के दायित्वों को शिरोधार्य कर अपना सहयोग तथा संरक्षण दे रहे हैं। विद्यालयी परंपरा एवं इतिहास का वाहक बनकर सर्वप्रथम सृजन पत्रिका २०१०-११ में अस्तित्व का अंश लेकर उपस्थित हुई। २०१७-१८ में द्वितीय संस्करण के साथ अबूझ पहेलियों तथा नये कलेवरों को समाहित करते हुए छात्र-छात्राओं के विचारों का माध्यम बनी।

वर्तमान समय में श्रीयुत संविन बंसल, जिलाधिकारी नैनीताल के प्रबंधन में संस्थान चहुँमुखी विकास की ओर अग्रसर है।पत्रिका नवोदयी जीवन की आवाज बनकर तृतीय संस्करण के रुप में संस्थान का परिचय तथा आवाज देने को आतुर है। संपादक मंडल इन्हीं विचारों के साथ पत्रिका को नये रंग में रंगने के लिए अपनी अभिव्यक्ति को तल्लीनता के साथ प्रस्तुत कर रहा है।'सृजन' तृतीय-संस्करण वर्तमान जीवन शैली में गायब होती हुई लेखनी का मजबूत हस्ताक्षर बनकर नवोदयी पौधशाला का प्रतिनिधित्व भी करेगी।

आज भौतिकतावाद की होड़ में यांत्रिकता का अस्थिर जमाना 'यावत जीवेत् सुखम जीवेत्' का वाहक बनकर दीर्घकालिक व्यवस्था का चालक नहीं बनना चाहता है।भागती हुई जिंदगी के बीच उसके पास सामाजिक सरोकारों के लिए अवकाश नहीं है। वह खोती हुई नैतिकता का भग्नावेश लेकर चक्रव्यूह का निहत्था अभिनन्यु है।ऐसे में समाज के भीतर लेखनी की अलख जगाने का मूर्त प्रयास शिक्षा केंद्रों में ही

संभव है, जो ज्ञान की इस परंपरा को कालान्तर में अग्रसारित कर सके। नवोदयी जीवन चकाचौंध की इस सच्चाई से परिचित होने के बावजूद शिक्षार्थी लेखनी की धारा से जगत को नया रुप देने में सक्षम हैं तथा इस कार्य को करने में अपना दायित्व-बोध भी समझती है।

'सृजन' पत्रिका का तृतीय-संस्करण नन्हें ज्ञान -मंजूषा है जो अपने व्यस्ततम जीवन में हर कोने को छानने की क्षमता रखती है वह उपहारस्वरुप नेपथ्य के माध्यम से अपनी बौद्धिकता की धमक पत्रिका के माध्यम से प्रस्तुत कराना चाहता है तथा अन्य शिक्षा केंद्रों से बेहतर वह पहचान का नियामक है। इस भौतिकतावादी-व्यवहार की परवाह न कर वह नव सृजन के लिए अपना अमूल्य समय देकर आने वाले संस्करणों के लालायित भी है।

सृजन तृतीय संस्करण के प्रकाशन का ध्येय यहां की अनुशासित प्रतिभाओं को मंच देने के साथ ज्ञान-विज्ञान के सेतु में गमन करती हुई विचारधारा को स्थान देने का कार्य ही संपादक मंडल का उचित उद्देश्य है।

इन्हीं ओजस्वी ज्ञान-भंडार के साथ 'सृजन' तृतीय-संस्करण संपादक मंडल द्वारा समर्पित.....।

कुल गीत नवोदय

स्यात की धरती कोटाभाभर
विद्या धाम नवोदय
ओ हो विद्याधाम नवोदय-०२
ऐसी- धरती, ऐसा भाभर
विद्याधाम नवोदय
ओ हो विद्याधाम नवोदय,
ओ हो अलबेला नवोदय।

आते हैं, ज्ञान के साधक
ओखलकाण्डा, मुक्तेश्वर
रामगढ़ की धरती से
धारी की घाटी से।
कोटा की राहों से
रामनगर की बाहों से।

भीमताल की धरती से
नैनीताल की धरती से,
हल्द्वानी से उमड़- उमड़ कर
लालकुआँ से निकल -निकलकर
विद्याधाम नवोदय ,ओहो अलबेला नवोदय
विद्या संग, क्रीड़ा संग
पाते ज्ञान हरदम- हरदम

यहाँ की हवा यहाँ का पानी
जोड़े सबकी बानी
ममता डोर बधी है लेखा

लगता बचपन खेल है जैसा

इस भूमि में पलना सीखा

जीवन को गढ़ना सीखा

है, कूल जहाँ की जीवन रेखा,

माटी जहाँ की सोना जैसी

ऐसा धाम नवोदय मेरा

विद्याधाम नवोदय

चार पताका सदा फहरती

कार्बेट- नन्दा सदा संवरती।

गंगा, राजा सदा चमकती

जीवन में उमंगें भरती

मंजिल के हम अर्जुन हैं

नवोदय के हम तारक हैं

जनपद के हम नायक हैं।

देश के हम सेवक हैं

ऐसा धाम नवोदय मेरा

विद्याधाम नवोदय।

ओ हो विद्याधाम नवोदय।

डॉ० जगदीश चन्द्र पाण्डेय

पी०जी०टी०-हिन्दी

राजीव गाँधी नवोदय विद्यालयों में प्रवेश-प्रक्रिया

राजीव गाँधी नवोदय विद्यालयों की स्थापना नई शिक्षा नीति १९८६ की उस संकल्पना के साथ हुई जिसके अन्तर्गत केन्द्र सरकार द्वारा भारत के प्रत्येक जनपद में जवाहर नवोदय विद्यालय खोले हैं ।इसी तर्ज पर ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को उत्तम एवं गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए, उनमें आत्मनिर्भरता की भावना का विकास करने के लिए, रोजगार के अवसरों के अनुरूप शिक्षा प्रदान करने के लिए, पर्यावरण के प्रति पर्याप्त जागरूकता पैदा करने के लिए तथा राष्ट्र की सेवा में उच्च स्तरों पर महत्वपूर्ण दायित्वों के निर्वाह हेतु दक्षता प्राप्त करने में सक्षम बनाने के लिए राज्य सरकार द्वारा राजीव गाँधी नवोदय विद्यालयों को प्रतिभा केन्द्र के रूप में स्थापित किया गया।

राजीव गाँधी नवोदय विद्यालय में प्रवेश हेतु परीक्षा राज्य स्तर पर उत्तराखंड विद्यालयी शिक्षा एवं परीक्षा परिषद रामनगर (नैनीताल) द्वारा आयोजित की जाती है । राजीव गाँधी नवोदय विद्यालय में सीटों की संख्या क्षेत्रवार एवं लिंग वार निम्नवत् हैं-

जनपद	सीटें प्रति जनपद	क्षेत्रवार आरक्षित	लिंगवार आरक्षित
नैनीताल,अल्मोड़ा, पिथौड़ागढ़, चम्पावत,पौड़ी,टिहरी,हरिद्वार,देहरादून	६०	८०प्रतिशत ग्रामीण व २० प्रतिशत शहरी	५०प्रतिशत बालिकाओं हेतु आरक्षित
उधमसिंहनगर, बागेश्वर,रुद्रप्रयाग,चमोली,उत्तरकाशी	३०		

आरक्षित व्यवस्था राज्य-स्तर पर निर्धारित प्राविधानों/नीति के अनुसार अनुसूचित जाति को १९ प्रतिशत, अनुसूचित जनजाति को ४ प्रतिशत एवं अन्य पिछड़ा वर्ग को १४ प्रतिशत देय होता है ।

राजीव गांधी नवोदय विद्यालय में प्रवेश हेतु वही अभ्यर्थी पात्र होते हैं जो-

१. छात्र/छात्रा जिस जनपद में कक्षा ०५ में अध्ययनरत है वह कक्षा ६ में प्रवेश हेतु उसी जनपद में संचालित राजीव गांधी नवोदय विद्यालय के लिए अर्ह होगा ।
२. अभ्यर्थी को उत्तराखंड राज्य के अर्न्तगत किसी भी जनपद में स्थित राज्य/ केंद्र सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों में कक्षा ५ में अध्ययनरत होना चाहिए ।
३. अभ्यर्थी की आयु प्रवेश वर्ष की ०१ अप्रैल को ९ से १३ वर्ष के मध्य होनी चाहिए ।
४. अभ्यर्थियों का क्रमागत वर्षो में कक्षा ०३,०४ व ०५ में सतत रुप से उत्तीर्ण होना आवश्यक है ।
५. शहरी अथवा ग्रामीण क्षेत्र का निर्धारण अभ्यर्थी के गत वर्षो एवं वर्तमान में अध्ययनरत विद्यालयों के आधार पर किया जाता है ।

६. ग्रामीण क्षेत्र से आशय उन अभ्यर्थियों से है जिन्होंनें गत तीनों कक्षाओं (क्रमश:कक्षा ०३,०४ व ०५) में ग्रामीण क्षेत्र में स्थित विद्यालयों में पूरे सत्र सतत अध्ययन किया है। एक भी दिन शहरी क्षेत्र के विद्यालय में अध्ययन करने वाले अभ्यर्थी को शहरी क्षेत्र का ही माना जायेगा।

राजीव गांधी नवोदय विद्यालय में प्रवेश हेतु परीक्षा का आयोजन सामान्यत: फरवरी माह के प्रथम रविवार को किया जाता है। परीक्षा वस्तुनिष्ठ प्रकार की होती है जिसकी अवधि ०२ घंटा निर्धारित है जिसमें एक-एक अंक के कुल १०० प्रश्न होते हैं। हिन्दी भाषा खंड को छोड़कर शेष दोनों खंडों के प्रश्न हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों माध्यमों में पूछे जाते हैं। ऋणात्मक मूल्यांकन नहीं होता है।

विषयवस्तु	प्रश्न/अंकों का विवरण
भाषा(हिन्दी) परीक्षा	२५
गणित परीक्षा	२५
मानसिक योग्यता परीक्षा	५०
योग	१००

राजीव गांधी नवोदय विद्यालय नैनीताल अपनी स्थापना २० अक्टूबर २००४ से जिले के चयनित प्रतिभाशाली एवं ग्रामीण छात्र-छात्राओं को आधुनिक एवं गुणवत्तापूर्वक शिक्षा प्रदान करने का सतत प्रयास कर रहा है। प्रशिक्षित अध्यापकों के मार्गदर्शन एवं प्रेरणा ने इस विद्यालय को एक अद्वितीय संस्थान के रुप में स्थापित किया है। विद्यालय छात्र छात्राओं के स्वर्णिम भविष्य के निर्माण व मानवता की सेवा के लिए अपने प्रयास अनवरत् जारी रखेगा।

संजय शर्मा (पी० जी० टी ० गणित)
प्रवेश प्रभारी

हमारा नवोदय

जनपद नैनीताल विकासखंड स्यात नामक स्थान साल-सागौन इत्यादि नवोदय को अपनी गोद में सवाँरते हुए अत्यंत प्रवाहित नहर वास्तव में हमारे विद्यालय के नहीं है। यहाँ का शान्त वातावरण आज भी जीवंत अनुभूति को अभिव्यक्त करता है। किसी नयन सुख से कम नहीं हैं।

कोटाबाग की सुरम्य घाटी में स्थित प्राकृतिक उपमानों से आच्छादित रमणीक प्रतीत होता है। सदानीरा लिए किसी जीवन-रेखा से कम प्राचीन शिक्षा केंद्र गुरुकुल की प्रात:काल सायस मयूरों के दर्शन

आज सम्पूर्ण विश्व में पर्यावरण संरक्षण हेतु भगीरथ प्रयास किये जा रहे हैं । इसमें वनों को बचाना एवं अधिक से अधिक पेड़ लगाना प्रमुख है । यदि धरती को तापमान में होने वाली वृद्धि के घातक परिणामों से बचाना है तो हमें वृक्षों को बचाने के साथ-साथ लगाना भी होगा । पेड़ केवल हमारे वातावरण में कॉर्बनडाईऑक्साइड के स्तर को ही नियंत्रित नहीं करते बल्कि, भूमिगत जल के स्तर को भी बनाये रखने में सहायक होते हैं । आज की सरकारें पेड़ों के महत्व एवं वृक्षारोपण के महत्वों को बखूबी समझती हैं। इस कार्य को आम जन तक पहुँचाने के लिए कई प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। इस तरह के प्रयासों के लिए विद्यालय सर्वोत्तम स्थान होते हैं ।क्योंकि बालक ही देश का भविष्य होते हैं । यदि उन्हें ठीक प्रकार से जागरुक किया जाय तो न केवल खुद अपितु, समाज को भी वे जागरुक करने का कार्य करेंगे ।इसी भावना को दृष्टिगत रखते हुये हमने भी अपने विद्यालय में पेड़-पौधे व फुलवारी लगाने आदि का वृहत कार्यक्रम शुरु किया है । हमारे विद्यालय में पूर्व से बहुत से पेड़ पौधे हैं जिनमें आम,अमरुद,ऑवला तथा कुछ सजावटी वनस्पति पेड़ भी हैं ।समय समय पर छात्रों के द्वारा इनकी कटाई छटाई की जाती है ।

विद्यालय हरा-भरा रहे इसके लिए विद्यालय के चारों सदनों के छात्र/छात्राओं को विद्यालय के परिसर का एक निश्चित क्षेत्र आवंटित है । सप्ताह में एक दिन प्रत्येक सदन द्वारा अपने सदन प्रभारी के नेतृत्व में अपने निर्धारित क्षेत्र में पेड़-पौधे लगाना उनकी निराई गुड़ाई करना एवं पानी देने का का कार्य किया जाता है ।इसके लिए सदनों के मध्य प्रतियोगिता के अंक भी निर्धारित किये गये हैं । जिससे प्रत्येक सदन दूसरे से बाजी मारने की कोशिश करता है ।

विगत वर्ष विद्यालय परिसर में ४० पॉम के पौधे रोपित किये गये थे । जो अब शनैः-शनैः वृक्ष बनने की ओर अग्रसर हैं । जब ये अपने पूर्ण स्वरुप को प्राप्त कर लेंगे तब विद्यालय की शोभा देखते ही बनेगी । इस वर्ष भी श्रीदेव सुमन की पुण्य तिथि के अवसर पर विद्यालय परिसर में वृहत वृक्षारोपण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ । सभी सदनों के द्वारा विभिन्न प्रकार के फलदार, छायादार पौधे रोपित किये गये । प्रमुख रुप से आम एवं कटहल के पौधे जो निकट भविष्य में शीघ्र ही फल देने लगेंगे। विद्यालय परिसर में चारों ओर फूलों की क्यारियां बनाई गयी हैं । इसमें मुख्य रुप से गेंदा,गुलाब एवं गुडहल प्रजाति के फूल हैं ।विद्यालय में स्थित प्राचीन शिव मंदिर का विगत वर्ष सौन्दर्यीकरण किया गया एवं उसके सामने वाले भाग में पुष्प वाटिका विकसित की गयी तथा एक सुन्दर मार्ग मंदिर तक जाने हेतु बनाया गया । यह सब छात्र-छात्राओं द्वारा अति उत्साह के साथ किया गया । इससे यह बात बलवती हो जाती है कि सकारात्मक विचार एवं कार्य करने की प्रेरणा बच्चों को दी जाए तो यह दुनिया और भी सुन्दर हो सकती है ।छात्रों की रुचि एवं उनके रुझान को देखते हुए प्रत्येक छात्र को एक पेड़ आवंटित किया गया है । उसकी देख-रेख खाद-पानी, निराई-गुड़ाई एवं सुरक्षा की जिम्मेदारी भी उसी छात्र को दी गयी है । छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए पेड़ के साथ उस छात्र की नाम की तख्ती लगा दी गयी है । इससे पेड़ों के प्रति छात्रों का अपनत्व और अधिक बढ़ गया है । यह एक प्रेरणादायक प्रयोग था । जिसके नतीजे बेहद उत्साहजनक है । इसी तरह हमारे परिसर मे प्रवेश द्वार से लेकर हर जगह जो भी पेड़ पौधे हैं उन सबकी कटाई-छटाई से लेकर अन्य कार्य तक यहाँ बखूबी किये जाते हैं । जबकि हमारे पास माली नहीं है ।

ज्ञान प्राप्त करने के लिए शांत एवं सुरम्य-वातावरण, प्रकृति से निकटता आदि हो तो उपलब्धि का स्तर बढ़ जाता है । विद्यालय में हम इसी तरह का वातावरण बनाने का प्रयास करते हैं । पेड़ पौधों, फूलों आदि से यह निर्मित होता है यदि बच्चों को हम सिखा पाये तो वे योग्य नागरिक बनेंगे। केवल पुस्तकीय ज्ञान अर्जित नहीं करेंगे बल्कि वास्तविक धरातल के विषय में भी ज्ञान प्राप्त करेंगे जो आवश्यक भी है । वैसे भी हमारे विद्यालय में अधिकतर विद्यार्थी ग्रामीण कृषक पृष्ठभूमि से आते हैं । उनके लिए यहाँ प्राप्त किया गया पेड़ पौधों एवं कृषि से संबंधित ज्ञान किसी वरदान से कम नहीं हैं ।

भीम सिंह सुरकाली
पी०जी०टी० इतिहास

वार्षिक रिपोर्ट सी०सी०ए० २०१८-१९

किसी भी राष्ट्र की सफलता के पीछे उसकी युवा-पीढ़ी का हाथ होता है। यह युवा-पीढ़ी राष्ट्र और समाज का ग्राफ बना व बिगाड़ सकती है। आधुनिक शिक्षा का जनक यूरोपीय जगत समय-समय पर अच्छी पीढ़ी के बलबूते अपनी सफलता की कहानी जल, थल और नभ में दिखाने के साथ ही प्रयासरत भी है। उनकी इस सफलता के पीछे वहाँ की सरकारों का युवा-पीढ़ी को तराशने का केंद्र-बिन्दु शिक्षालय ही रहा । जिसकी ओट में शिक्षार्जन के साथ पाठ्येत्तर क्रियाकलापों का जीवन संगिनी का रुप दिया जाना आवश्यक समझा गया। हालांकि भारतीय प्राचीन शिक्षा पद्धति एवं शिक्षा केंद्रों में यह रुप पहले से ही उपस्थित था। परिस्थिजन्य भारत कालान्तर में यह रुप नहीं रख सका । जिसका आधुनिकीकरण यूरोप में दिखाई दिया।

भूमंडलीकरण के इस दौर में शिक्षा एक रंग में नजर आने लगी है। हर शिक्षालय पठन-पाठन के साथ-साथ पाठ्येत्तर क्रियाकलापों में अधिक से अधिक महत्व दे रहा है, क्योंकि वे अपनी युवा पीढ़ी का अधिकांश भविष्य विद्यालयों में सृजित करने की धारणा बलवती किए हुए है । कम समय में अधिक कौशल का विकास प्रत्येक शिक्षालय की विशेषता बन गई है।

पठन-पाठन के साथ पाठ्येत्तर क्रियाकलापों को प्रांजल बनाने के लिए राजीव गांधी नवोदय विद्यालय कोटाबाग के प्रत्येक छात्र-छात्रा को अपना प्रतिभागी सदस्य मानकर सी०सी०ए० अपने आविर्भाव समय से सफलता की कहानी गढ़ रहा है । समय-समय पर इसका प्रभाव छात्रों के व्यक्तित्व पर परिलक्षित होने एवं विभिन्न प्रतिस्पर्द्धाओं में उनके विजय होने का अमोघ अस्त्र भी सिद्ध हो रहा है ।हमारे विद्यालय में सी० सी०ए० की वर्ष-भर की तालिका के अंतर्गत राष्ट्रीय,अतंर्राष्ट्रीय साहित्य, वाद-विवाद प्रतियोगिता, चर्चा परिचर्चा, वैज्ञानिक गतिविधि, पर्यावरण, स्वच्छता, महिला सशक्तीकरण, सिनेमाजगत,क्रीडा, स्थानीय-प्रादेशिक सांस्कृतिक रंगारग कार्यक्रम,धार्मिक सौहार्द, तीज-त्योहार आदि को मंच देने की परंपरा रही है । नवोदयी परिवार पाठ्येतर क्रियाकलापों में इन सभी विषयों को संजोये हुए है ।

यह सहगामी क्रियाकलाप सदनों के माध्यम से जूनियर,सीनियर समूह का आधार बनकर अपने प्रतिभा को परिभाषित करता है। सत्र २०१८-१९ में उपर्युक्त तथ्यों का पालन कर प्रति सप्ताह निर्धारित तिथि को सफलतापूर्वक कार्यक्रमों का सम्पादन होता रहा है। इस वर्ष सी०सी०ए० समिति में बालसभा, स्वच्छता,वाल पेंटिग,प्रातःकालीन व्यायाम गतिविधि एवं उत्कृष्टता अंक योजना, पर्यावरण, चर्चा परिचर्चा आदि विषयों को नया रुप देकर सी०सी०ए० की गतिविधि को चार चाँद लगाने का प्रयास किया गया है । इन सभी कार्यो का विधिवत पारस्परिक सहयोग के साथ मूल्यांकन की प्रथा भी अपनाई गई । सत्र २०१८-१९ सी०सी०ए० का प्रारंभ ०४ अप्रैल २०१८ से प्रारंभ होकर २९ मार्च २०१९ को क्रीडा सप्ताह के साथ संपन्न हुआ। प्रति सप्ताह में आयोजित कार्यक्रमों के परिणाम तथा माह के अंतिम दिवस को सभी सदनों को आवंटित स्थलों का निरीक्षण कर मूल्यांकन निर्णायकों द्वारा विधिवत किया जाता रहा है ।

अंत में सी०सी०ए० के वर्ष भर के परिणामों को समेटते हुये पाठ्येत्तर/सहगामी क्रियाकलापों में राजाजी सदन ने २४२६ अकों के साथ संपूर्ण विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया ।

वार्षिकोत्सव अनुगूँज २०१८ की झलकियाँ

School's
Co-
Curricular
Activities

राजीव गाँधी नवोदय विद्यालय

INTER HOUSE
WRITING

हिन्दी दिवस की

वार्षिक खेल आख्या २०१८-१९

पठन-पाठन की तरह ही हमारे जीवन में क्रीड़ा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है । इसके द्वारा शारीरिक विकास के साथ-साथ नैतिक,मानसिक आदि आयामों का निर्धारण संभव हो पाता है । क्रीड़ा में पारस्परिक सहभागिता का अंश समाहित होने से यह हमारे शिक्षार्जन की गतिविधि को गुणोत्तर करता है । क्रीड़ा एवं योगाभ्यास का संयुक्तक्रम हमारे विद्यालय में प्रातःकालीन समय से लेकर सायंकालीन अवधि तक छात्र/छात्राओं को अपनी क्षमताओं का बेहतरीन इस्तेमाल करने में सहायक होते हैं । पारस्परिक संयोजन के साथ उनमें खेल भावना का विकास, आसन व प्राणायाम के साथ खेल-कूद का रचना-संसार यहां के बौद्धिक वातावरण का प्रतीक है, जो उसके उत्कर्ष का परिचायक भी है ।

आसनों के अन्तर्गत सूर्य नमस्कार, बज्रासन, हलासन, सर्वांगासन, भुजंगासन, चक्रासन, ताड़सन, सेतुबंधासन, गोमुखासन,अर्धमत्स्येन्द्रासन आदि का विधिवत अभ्यास कराया जाता है ।

इसी तरह विभिन्न खेलों के अन्तर्गत विद्यालय के छात्र/छात्राएं खेलों में जैसे बैडमिटंन, बास्केट बाल, हैण्ड बाल, खो-खो, कबड्डी, टेबिल-टेनिस आदि में बढ़चढ़ कर प्रतिभाग करते हैं तथा विद्यालयी शिक्षा के अन्तर्गत आयोजित खेलों में चरणबद्व रुप से राष्ट्रीय स्तर में भी प्रतिभाग करते हैं। सत्र २०१८-१९ में ३५ छात्र-छात्राओं का चयन राज्य स्तर के लिए तथा चार बालकों का चयन राष्ट्रीय प्रतिस्पर्द्धा के लिए हुआ ।

योग क्रियाकलापों में चार छात्र-छात्राओं का चयन योग ओलंपियार्ड में होने से विद्यालय को एक उपलब्धि प्राप्त हुई ।

विद्यालय में लॉन टेनिस खेल के शुभारंभ की झलकियां

विद्यालय प्रागण में खेल गतिविधियां

उपलब्धियाँ

Our National Players

Kamal Upreti
Class XI
U-19 Table Tennis

Kamal Singh Mehta
Class XI
U-19 Table Tennis

Diwakar Negi
Class XI
U-19 Table Tennis

Pankaj Mehta
Class VIII
U-14 Hand Ball

State level Science Quiz Competition Winners

Khushi Chhimwal
Class XI

Triyendra Singh Bisht
Class XI

Dhruv Pandey
Class X

Divyanshu Pargain
Class X

District level GK Quiz Competition Winners

Anju Bisht
Class XII

Himanshu Arya
Class XII

Ravindra Singh Janoti
Class XI

District level Sanskrit Debate Competition Winners

Tanuja Sanwal
Class XII

Vaisnavi Joshi
Class X

Gunjan Mehra
Class X

Gunjan Mehra (Class X) selected for Inspire Award 2019

"Urja Mitra"

Uttarakhand renewable Energy Development Agency (UREDA) organized an event regarding Energy Conservation that was held at dehradun on 14 Dec 2019. Two Students **Kusum Ruwali (Class X)** and **Bhumika Bhudlakoti (Class X)** of RGNV Kotabagh selected as **"Urja Mitra"** from District Nainital.

Hema Rawat Class 7A

Deepanshu Pargai Class 9

Lucky Goswami

Class 7B

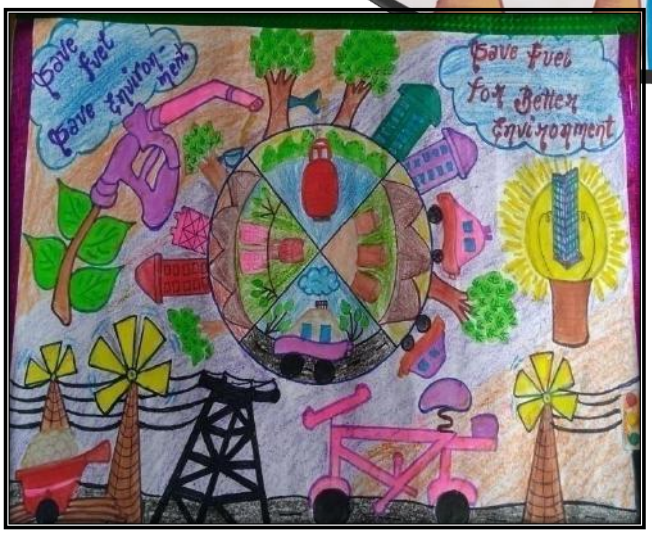

Kiran Goswami Class 8 B

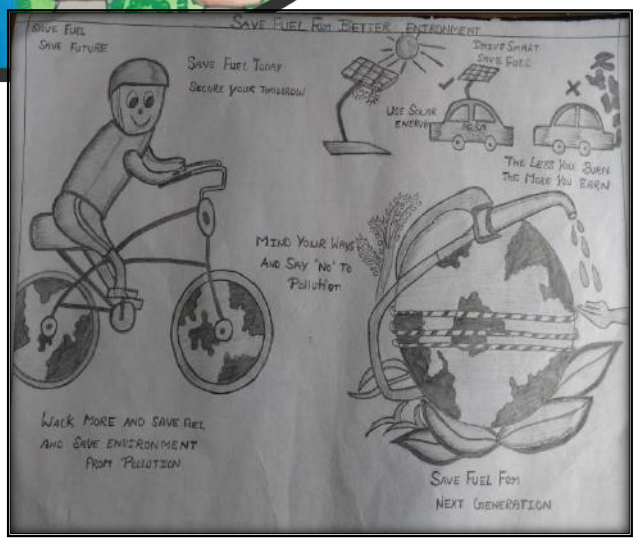

Ruchi Butola Class 7B

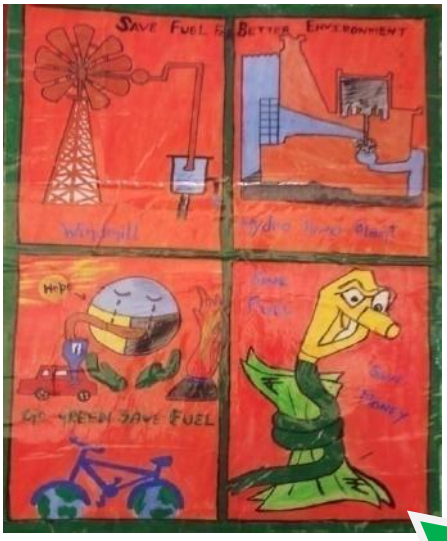

Priyanka Mandal
Khusbu Kamboj
Khushi Bisht

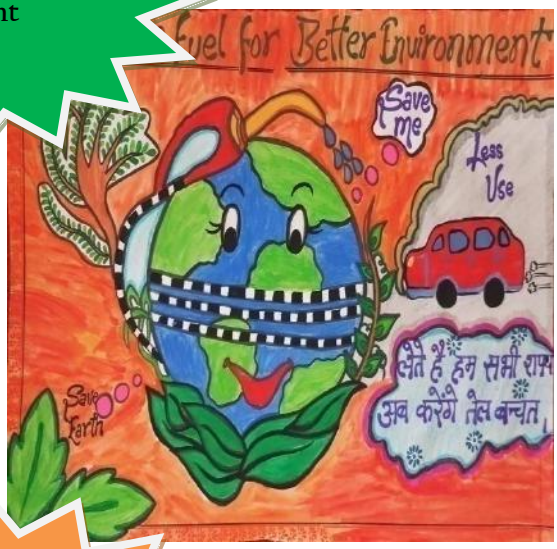

Kushi Rajwar
Dinesh Arya
Kesav Singh Yadav

Snehlata Chandra
Priya Rana
Supriya Mazumdar
Suman
SAVE FUEL FOR BETTER ENVIRONMENT
Save Fuel for Our Life
Car Charging Centre
Cycle for short distance
Pawan Padaliya
Sahima Katoon
Niharika Pandey
Anuska pandey
Divya Arya
SAVE FUEL FOR BETTER ENVIRONMENT
SAVE FUEL FOR BETTER ENVIRONMENT
SAVE EARTH
SAVE FUEL
SAVE FUEL FOR BETTER ENVIRONMENT

सत्र २०१९-२० में कक्षा ६ में अध्ययनरत छात्र-छात्रायें

इंटरनेट का खेल

इंटरनेट का खेल है,
सब रिस्तों का मेल है।।
दुनिया है बड़ी-बड़ी सी,
इंसानों से भरी-भरी सी,
Whatsapp,FB,Insta है,
Google,Email,You tube हैं
जो मेल जोल कराते है
बातें आगे बढ़ाते है।।
दुनिया है गोल-गोल सी,
इंसानों के मेल-जोल सी
इंटरनेट का खेल ये जानों
उपयोग करने की बात है मानों
पर सही तरह से करो प्रयोग,
वरना मिल पायगा ना सहयोग।।

नाम-शैलेष उपाध्याय
कक्षा-१०

आसमान में तारे

आसमान में चमकते तारे ,

क्या तुमने सब निहारे,

रुकते -रुकते, आते सारे ,

कौन है? कितने पास तुम्हारे ,

दिन में क्यों छिपते है तारे,

जिसका नाम है ध्रुव-तारा ,

कितने सुन्दर कितने प्यारे ।

इतने अच्छे इतने प्यारे ।

किस-किस का तुम नाम जानते ।

रात में क्यों दिखते तारे ।

इसमें से एक ऐसा तारा ।

जो दिखता अलग सा न्यारा ।

नाम-अनुज चंद्र
कक्षा-१०

स्कूल हमारा नवोदय विद्यालय स्यात

स्कूल हमारा नवोदय विद्यालय,
इसके ज्ञान से सभी अज्ञात।
काम चलता Always दिन रात,
अब होगा ये विख्यात।
स्कूल हमारा ऐसा है जैसे कोई मंदिर है,
Teacher स्कूल के ऐसे है जैसे कोई भगवान।
पढाते है सारे Subject,
वे भी बिल्कुल Correct.
स्वच्छ है हमारा स्कूल ,
चलता है On The Road
अज्ञान बच्चों को पढ़ाना-सिखलाया ,
ज्ञान बाट के खूब पढ़ाया।
सब कहते है Senior चलता है On The Road,
भगवान से पहले होते Teacher's
अब Poem होती है Done.
क्योंकि निकलने वाला है Sun.....

नाम-यशोदा मेहता
कक्षा-७ब

अनोखा पत्र

प्रिय पाठक गण,

बैंगन काका व लौकी काकी को भतीजे टमाटर आलू का जबरदस्ती प्रमाण आगे हाल बेहाल है। मेरी बहन मटर देवी का विवाह पत्ता नगर के निवासी मूली प्रसाद जी के सुपुत्र चिरंजीव शलजम के साथ चैत्र शुदी अमावस को ठीक ३:५६ मी० पर होना तय हुआ है। आप शादी के पश्चात पधारकर वातावरण को नमकीन बनाने की कृपा करें।यहाँ पर फूलगोभी मौसी के साहबजादे गोभी पकोड़े पधार चुके हैं । मैंने उन्हें रखा है नमक मिर्च मसालों का कोई स्थान नहीं है। भिंडी एक्सप्रेस से कटहल ताउ, मिर्ची बुआ, कांदु मामा, बहन तुरई, कद्दू फूफा शादी होने से दो दिन पहले बधू मटर देवी की तलाश में निकले हैं। मटर देवी जाति धर्म के बंधनों को तोड़ते हुए दूसरे मजहब के तरबूज पुत्र खरबूजे के साथ भाग गई हैं । शेष सब संकट हैं, हमें आपके पत्र में कोई रूचि नहीं है। इसलिए पत्र का जबाब कभी नहीं देना।

मेरा पता-धनिया घास
प्याज भवन : कुकुरमुत्ता गली
गाजर रोड, करेला नगर
जिला-पालक फ्रासबीन उत्तराखण्ड।

नाम-मनीषा आर्या
कक्षा-९

काश वो मुझसे कहकर जाते

काश वो मुझसे कहकर जाते,
बतलाते तो शायद सुकून कुछ दे पाते।
मुझको बहुत उन्होंने माना, फिर भी न मुझको पहचाना,
मैंने तो बस वो ही जाना, जो थे वो मुझको बतलाते।

काश वो मुझसे कहकर जाते,
मैंने तो बस इतना ही पाया, बिछड़ा जो न वापस आया।
साथ तेरा बस इतना ही पाया, और वो क्या मुझसे अब पाते।
काश वो मुझसे कहकर जाते।

प्यार नहीं यह निष्ठुरता है,
ये जो मेरी व्याकुलता है।
अहसास अभी यह नहीं नया है,
एक बार तो मुझको समझाते।
काश वो मुझसे कहकर जाते।

आँसुओं की प्यास ले,
जब फिर मिलोगे
क्या पता तुम कौन सा तारा बनोगे,
काश कुछ भूल के सपना संजोते।
काश वो मुझसे कहकर जाते।

है अजीब सी बात मेरे भाग्य में,
हूँ समन्दर प्यार का, उजड़ा सा बंजर लगूँगी।
दास्तां भी न जाने होगी किसी जुबान में,
तुम होते तो शायद कुछ कह पाते।
काश वो मुझसे कहकर जाते।

सपना आर्या
कक्षा-१२ ब

समय

जो करे सदुपयोग, बने महान।

समय हमेशा लेता परीक्षा,

करता नहीं किसी की प्रतिक्षा।

समय का पहिया धूमा जाए,

लौट के फिर जो कभी न आए।

समय है एक अमूल्य धन,

कदर करे जो, सुखी वो मन।

समय को जानने में न करो देर,

करेगा जाने क्या समय का फेर।

याशिका
कक्षा-१०

इसे पढ़ना मना है

पता नहीं मनुष्य का स्वभाव कैसा है, जिस काम के लिए उसे रोका जाए उस काम को वह जरूर करता है. बसों की शीट पर लिखा होता है ''महिलाओं के लिए'' लेकिन देखने में यह आता है -की महिला बच्चा उठाए खड़ी है। परन्तु पुरुष शीट पर आराम से बैठे रहते हैं।

अब बसों की बात चल रही है ,तो एक उदाहरण और लेते हैं, बसों में मोटे -मोटे अक्षरों में लिखा होता है,, ''नो स्मोकिंग'' या ''धूम्रपान निषेध ''लेकिन सिगरेट पीने का मजा बसों में आता है वह घर या सड़क पर नहीं।

इसके अलावा ''नो पार्किंग ''वाले स्थान पर कई लोग गाड़ी खड़ी करना अपनी शान समझते हैं। ''थूकना मना है'' लिखा देखकर लोगों के मन में ना चाहते हुए भी थूक आ जाता है। ''यूज मी ''डिब्बा अक्सर खाली पड़ा रहता है। लाइब्रेरी में ''साइलेंट प्लीज ''के बावजूद लोग वहाँ पर बातें करना अपना निजी हक समझते हैं।

मना किए गए काम को करने में सचमुच हमें एक अदभुत आनंद आता है। इस आनंद को तो केवल भोगने वाले ही जान सकते हैं। चलिए, हम किसी और के बारे में क्या कह सकते हैं? अब आपको ही देख लीजिये, ऊपर कितने सुन्दर अक्षरों में लिखा है ''इसे पढ़ना मना है'' लेकिन आपने पढ़ लिया है।

पायल आर्या
कक्षा ७ अ

बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ

बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ,
हर घर की शान है बेटियाँ।
शिक्षा में बेटों से विद्वान बेटियाँ ,
जन्म लेते ही लक्ष्मी बन जाती हैं बेटियाँ।
घर का सभी काम करती हैं बेटियाँ,
घर को व्यवस्थित रखती हैं बेटियाँ।
जीवन के सभी कर्तव्य निभाती हैं बेटियाँ,
घर की मान-मर्यादा हैं बेटियाँ।
हर पर सुख देती हैं बेटियाँ,
नारी-धर्म का सम्मान हैं बेटियाँ।
देश की रक्षा में आगे हैं बेटियाँ,
सीता-राधा गौरा हैं बेटियाँ।
माँ-बहन पत्नी-धर्म निभाती हैं बेटियाँ,
भारत माता की शान हैं बेटियाँ।
भगवान का वरदान हैं बेटियाँ,
हम बेटियों को बचाएंगे।
देश का उज्ज्वल भविष्य बनाएंगे।

खुशी छिमवाल
कक्षा- १०

हमारा राष्ट्र-हमारा गर्व

देश हमारा प्यारा है,
सब देशों से न्यारा है।
शीश उठाये खड़ा हिमालय,
करता इसकी रखवाली है।
गंगा - यमुना की धाराएं,
फैलाती हरियाली हैं।।

हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई,
आपस में हैं भाई - भाई।
बना रहे यह भाईचारा,
देश हमारा सबसे प्यारा।।

राष्ट्रीय ध्वज है यहाँ तिरंगा,
जिससे है सम्मान हमारा।
चारों ओर पक्षियों का डेरा,
चहचहाना है इनका न्यारा।।

वीर योद्धा हैं यहाँ पर,
सुरक्षा में तैनात रहते हैं।
खड़े रहकर देश की सीमा पर,
सदा रक्षा करते हैं देश की।।

बहती हैं नदियों की धारा,
पावन करती वातावरण यहाँ।
धन्य हैं हम भारतवासी,
जन्म लिया जो हमने यहाँ।।

देश हमारा सबसे प्यारा,
आँखों का तारा हमारा।

''जय हिंद, जय भारत''।

नीरज कुमार
कक्षा ९

सफलता का रहस्य

अधिकतर सफल लोग सफलता लेकर जन्मे नहीं होते हैं, बल्कि उन्होंने निरन्तर कोशिशें करके सफलता प्राप्त की होती हैं। और लगातार कोशिशें करते गये। जैसे सचिन तेंदुलकर, धीरूभाई अंबानी, मार्क जुगरबर्ग, संदीप माहेश्वरी, लता मंगेशकर, शाहरुख खान, etc... तो इन लोगों का success का ऐसा कौन सा Secret पता था ? जो अन्य को प्राप्त नहीं होता। इस आर्टिकल को आखिर तक पढ़ते जाये आपको सभी Secret of success का अनुमान हो जायेगा । Sccessful people Goal (लक्ष्य) बनाकर उसे पाने की कोशिश करते हैं।सफल लोग सामान्य होते हैं। अपने दिमाग में वे वास्तविक लक्ष्य को ही रखते हैं। वे जानते हैं कि उन्हें कौन सी चीज चाहिए और वे उसे पाने के लिये क्यों लड़ रहे हैं। सफल लोग ही स्मार्ट लक्ष्य को बनाते हैं और उसे पाने की कोशिश करते हैं।

जब आप लक्ष्य निर्धारित करते हो तब आप अपने आप को ही प्रेरित करते रहते हैं। स्मार्टनेस को हासिल करने के लिए अपनी योग्यता और आदतों को विकसित करने की जरुरत होगी। तभी आप धीरे-धीरे अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ सकते हैं। इन नियमों को अपनाकर आप खुद का विकास कर लक्ष्य निर्धारित कर सकते हैं।

सफल लोग सोच-समझकर निर्णय लेते है और तत्काल प्रक्रिया करते हैं।

ये कोई मायने नहीं रखता की आप कितने बुद्धिमान हो या आपने कितनी डिग्रियाँ हासिल की है। तब तक आप इस दुनिया में कुछ बदल नहीं सकते जब तक आप कोई एक्शन नहीं ले लेते। किसी चीज को कैसे करते ये जानना और उसे असल में करके देखना। इन दोनों बातों में बहुत बड़ा अंतर है। यदि आप एक्शन नहीं लोगे तो आपका ज्ञान और आपकी बुद्धिमत्ता किसी काम की नहीं।इसलिए आपको अपने ज्ञान की बदौलत सोच-समझकर निर्णय लेने की और निर्णय लेने के बाद उसके अनुसार तुरंत एक्शन लेने की जरुरत है तभी आप सफल बन पाएंगे और अपने सपनो को पूरा कर सकोगे।सुख-सुविधाओं से भरे क्षेत्र के बाहर भी काम करो।

बहुत-सी बार मैं देखता हूँ की सफल लोग किसी भी अवसर को यूँ ही अपना लेते हैं केवल इसलिए नहीं की वे हमेशा तैयार होते हैं। बल्कि वे नए अवसरों को अपनाकर कुछ सीखना चाहते हैं। वे ज्यादा ज्ञान अर्जित करना चाहते हैं।

सच्चाई यही है की जब अवसर आते हैं तब कोई भी १०० प्रतिशत अपने आप को तैयार नहीं समझता। क्योंकि हमारे जीवन में बहुत से अवसर हमें मानसिक और बौद्धिक रूप से विकसित करने के लिए आते हैं। ऐसे अवसर हमें सुख-सुविधाओं से भरे क्षेत्र के बाहर आकार काम करने का दबाव डालते हैं। आपको समझ लेना चाहिए कि जहाँ आप आराम महसूस न करें वहाँ आप पूरी तरह से तैयार नहीं हैं।

यदि आप अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव लाना चाहते हो तो आपके अपने क्षेत्र से बाहर निकलकर चुनौतियों को अपनाकर उनका सामना करना होगा और भले ही आप १००% तैयार न हो लेकिन आपको चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा।

हमेशा छोटे-छोटे काम करें और लगातार प्रगति करने पर ध्यान केन्द्रित करें।

हेनरी फोर्ड ने एक बार कहा था,

"यदि आप कठिन से कठिन काम को छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँटते हैं तो वह काम भी आपके लिए आसान हो जाएगा।"

इसी बात को हम एक प्रश्न की मदद से समझ सकते हैं ; आप एक हाथी को कैसे खाओगे? जवाब : एक समय एक-एक टुकड़ा खाकर। इसी धारणा को अपनाकर आप बड़े से बड़े लक्ष्य को भी हासिल कर सकते हो। इसीलिए हमेशा छोटा काम करकर शुरुआत करें, कितना बेहतर होगा की आप खुशी से धीरे-धीरे अपने लक्ष्य को हासिल कर के सफल बनें।

और यदि आप कुछ छोटा करने की कोशिश करोगे तो आपको ज्यादा प्रेरणा की भी जरुरत नहीं होगी। कुछ छोटा करते रहने से आप खुद अपने लिए खुशी के पल बना सकते हो और जिसकी आपको जरुरत है उसे हासिल कर सकते हो। ऐसा करने से आपमें सकारात्मक बदलाव होगा।

कोई भी एक ही काम करते हो अपने लक्ष्य को हासिल करने की कोशिश करें और फिर मुश्किलों को हल करने की योजना बनाए। उदाहरण के लिये यदि आप अपना वजन कम करना चाहते हो तो पहले अपने लिये स्वस्थ खाने की सूची बना लें और जब आपको भूख लगे तो वही खाना खायें। ऐसा करना शुरू में थोड़ा मुश्किल होगा।

लेकिन बाद में ऐसा करना आपके लिए बहुत आसान होगा। और यही मैं आपको यहाँ बताना चाहता हूँ। जैसे-जैसे आपकी ताकत बढ़ेगी वैसे-वैसे आप बड़ी-बड़ी चुनौतियों को स्वीकार करने लगेंगे।

अपनी Progress पर ध्यांन दो और रास्ता बनाते जाओ।

सफल लोग केवल उनके जॉब या व्यवसाय में ही काम नहीं करते। बल्कि वे इनके उपर भी काम करते हैं। वे रोज एक कदम पीछे जाकर अपनी Progress को गिनते हैं। वे अपने लक्ष्य के विपरीत अपनी Progress पर ध्यान देते हैं और आगे क्या करना है इसका PLAN बनाते हैं।

यदि आपने अपनी Progress पर ध्यान नहीं दिया तो आप उसे नियंत्रित भी नहीं कर सकते।

आपको पहले ये जानना होगा की आपका लक्ष्य क्या है ? और कौन सी बातें आपके लक्ष्य को प्रभावित करती हैं । और उन्हीं चीजों को ध्यान देना चाहिए । मैं आपको यह राय देना चाहूँगा की ये जानना बहुत जरुरी है की कोई भी काम करने के पीछे आपका लक्ष्य क्या है? और आपके काम में ऐसी कौन सी चीजे हैं, जो आपके लक्ष्य को प्रभावित करती हैं । तभी आप अपनी Progress पर ध्यान दे सकोगे।

फिर चाहे आप महीनों , हफ्तों या सालों में भी अपनी Progress को गिन सकते हैं । आप चाहे एक समय में कम Progress करो या ज्यादा करो ये मायने नही रखता। सिर्फ आपका उस बात को जानना मायने रखता है ताकि पहले काम करते समय आपने जो गलतियां की थी वो गलतियां आप दूसरी बार काम करते समय नहीं करें।

अपनी गलतियों से सीखें और सकारात्मक दृष्टिकोण रखें।

सफल लोग हमेशा सकारात्मक बातों पर ही ध्यान केन्द्रित करते हैं। वे किसी भी परिस्थिति में अपने लिए सकारात्मकता ही देखते हैं। क्योंकि वे जानते हैं की उनकी सकारात्मकता ही उन्हें महान बनाती है। यदि आप सफल बनना चाहते हो तो इस दुनिया के प्रति आपका दृष्टिकोण भी सकारात्मक ही होना चाहिये।

जिंदगी हर मोड़ पर आपकी परीक्षा लेती रहेगी। लेकिन यदि आपने अपने अंदर नकारात्मकता भर ली तो आप कभी सकारात्मक नहीं बन सकते।

हमेशा याद रखें, आपके द्वारा की गयी हर एक गलती आपकी प्रगति ही है। गलतियाँ आपको महत्वपूर्ण पाठ पढ़ाती है। जितनी आप गलतियाँ करोगे उतना ही आप अपने लक्ष्य के करीब जाओगे। लेकिन कुछ न करने को चुनना ही आपकी सबसे बड़ी गलती होगी और वह आपको काफी दुःख भी देगी और ऐसा करने से आपको गलतियां करने से भी डर लगेगा।

इसलिए कभी न शर्माएं, कभी अपने आप पर शक न करें। नकारात्मकता को अपने शरीर से दूर रखें । और सकारात्मकता को अपनाएं ।

अपने जीवन में संतुलन बनाये रखें ।

यदि आप बहुत से लोगों को वे जीवन में क्या चाहते है, ये सवाल पूछोंगे तो वे यही कहेंगे , "प्यार करना चाहते हैं", "पैसे कमाना चाहते हैं", "परिवार के साथ समय बिताना चाहते हैं", "खुशी पाना चाहते हैं", "लक्ष्य हासिल करना चाहते हैं" इत्यादि। लेकिन बड़े दुःख की बात है की बहुत से लोग अपने इन लक्ष्यों को हासिल करने के लिये अपनी जिंदगी को संतुलित नहीं कर पाते, और बड़ी मुश्किल से इनमें से एक या दो चीजों को ही वे हासिल कर पाते हैं।

खजान महतोलिया
कक्षा-११

लालची किसान

एक लालची किसान था । उसकी फसल अच्छी नहीं होती थी और इसलिए वह परमात्मा से दुखी और परेशान रहता था। क्योंकि कभी तेज बारिश से, कभी ओलों से, कभी तेज आँधी व तूफान से उसकी फसल थोड़ी बहुत खराब हो जाया करती थी फिर एक दिन किसान अपने खेतों की तरफ जा रहा था। जब वह खेत पर पहुँचता है तो वह देखता है कि फसल मुरझाई होती है तब वह परेशान हो जाता है और परमात्मा से कहता है, हे ईश्वर!आप तो भगवान है लेकिन लगता है कि आपको खेती-बाड़ी की जरा भी समझ नहीं है । एक साल मुझे मौका देकर देखिए जैसा में चाहूँ वैसा मौसम कीजिए। ईश्वर मुस्कराए और बोले-जैसा तुम चाहो वैसा ही होगा । मैं बिल्कुल भी दखल नहीं दूँगा। उसने गेहूँ की फसल

बोई जब धूप चाहे तब ईश्वर ने धूप दी जब बारिश चाहे ईश्वर ने बारिश दी, लेकिन उसने आँधी, ओले और तूफान को आने नहीं दिया। किसान बहुत खुश था क्योंकि ऐसी फसल कभी भी नहीं हुई थी। उसने मन ही मन में सोचा की अब परमात्मा को पता चलेगा की अच्छी फसल कैसे पैदा की जाती है। फसल कटने का वक्त आया किसान अपने खेतों की तरफ गया और फसल काटने लगा जब उसने फसल काटी तो वह हैरान रह गया कि गेहूँ की एक भी बाली में दाना नहीं था। उदास होकर उसने ईश्वर को फिर पुकारा, हे ईश्वर! आप कहाँ हो कृपया प्रकट हो, मुझे आपकी आवश्यकता है। ईश्वर प्रकट हुए हे प्रभु! ये क्या हो गया, गेहूँ की एक भी बाली में दाना नहीं है। ईश्वर बोले ये तो होना ही था इन पौधों को तुमने अच्छे-अच्छे मौसम दिखाए इनको संघर्षों से जूझने का मौका ही नहीं दिया इसलिए ये खोखले रह गये जब आँधी और तूफान में एक पौधा जो खड़ा रहता है उसके अन्दर जो बल पैदा होता है ,और उससे एक बीज का जन्म होता है। लेकिन तुमने इन्हें संघर्ष करने ही नहीं दिया तब जाकर किसान को अपनी गलती का एहसास होता है और ईश्वर से अपने किये की माफी माँगता है। इसलिए जिन्दगी में कभी कोई चुनौती आए तो उससे घबराना नहीं चाहिए अपितु हँस कर उसका सामना करना चाहिए।

नाम-नैन्शी आर्या
कक्षा-६अ

सती प्रथा : खोया सम्मान

कैसी थी यह मूल प्रथा,
किसी औरत को इसने जीने न दिया।
औरतों का सुहाग मिटते ही,
क्यों लोग कर देते उसे इस दुनिया से जुदा।
क्या औरतों को नहीं था जीने का हक,
क्यों छीन लेते दुनिया वाले उसका चैन सुख।
कैसा यह अंधेरा छाया,
पुरुषों ने अपना राज जमाया।
क्या यह थी ईश्वर की देन,
क्या उसने पुरुषों को अलग बनाया।
कैसा यह उजाला आया, नई-किरण साथ लाया।
इस प्रथा पर पाबंदी लगाने,एक नव युवक सामने आया।
१८२९ में लगी उस पर पाबंदी,नहीं थी किसी को उससे आपत्ति।
धीरे-धीरे औरतों विद्यालय आने लगी,
लड़कों को पीछे करने की क्षमता बढ़ाने लगी।
क्यों किया जाने लगा उनके साथ यहाँ भी भेदभाव,
क्यों उनकी पढ़ाई का किया गया लड़कों के मुकाबले अभाव।
धीरे-धीरे गुजरता गया वक्त,

औरतों को भी दी गयी पढ़ाई सख्त ।

एक दिन कुछ ऐसा आया,

औरतों को भी कोई चाँद पर जाने से रोक न पाया ।

कैसा यह ईश्वर ने नया खेल रचाया,

औरतों का खोया सम्मान उन्हें वापस दिलाया ।

नाम-हर्षित सत्यवली

कक्षा-८

बचपन

एक बचपन का जमाना था,
जिसमें खुशियों का खजाना था ।
चाहत चाँद को पाने की थी,
पर दिल क्रिकेट का दिवाना था ।

खबर न थी कुछ सुबह की,
ना शाम का ठिकाना था ।
पढ़कर अपने स्कूल से,
खेलने पर जाना था ।

माँ की एक कहानी थी,
जिसमें परियों का फसाना था ।
बारिश में भी नहाना था,
बचपन में हर मौसम सुहाना था ।

ललित बधानी
कक्षा-७

My School Promise

Each day I will do my best,
And I would not do any less.
My work will always please me,
And I would not accept a mess.
I will color very carefully,
My writing will be neat.
And I will not be happy,

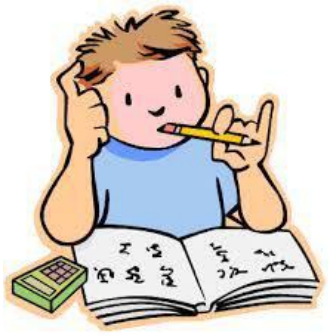

Till my papers are complete.
I will always do my homework ,
And try my best on every test.
I would not forget my promise,
To do my very best.

Khushbu Kamboj
Class 8

Life

Life is a tragedy to face
Life is a duty to perform
Life is a journey to complete
Life is a love to enjoy
Life is a struggle to fight
Life is a puzzle to solve
Life is a goal to achieve
Life is a promise to fulfill

Mukesh Arya
Class 10

Everything can be Achieved

Today we are living in a competitive world and have to compete from every typical task with full stretch but the person and students, not getting the acceptable results always pipe ones eye and gave blame to destiny like saying that their maths is not good or their science and other subjects are not good . So I have an example for these type of students. This is the story of a sharp shooter in the Hungarian army and this was Karoly Takcis. He was the best and evergreen shooter of his regiment. And He had won almost all the trophies in his country.

All the people has predicted that he will win gold medal in 1940 Olympic but it was the errors of destiny that during a practice session in 1938 one hand grenade

burst into his hand and he was taken to hospital and There doctors told him that he is no more for shooting because he has lost his right hand but he was tough as a nail and he done hard practice and make his left hand strong . And in 1939 he won gold medal for his country. After that he move forward and done a shoulder breaking hard work for 1940 Olympics, but this Olympic got cancelled by 2 world war and again he done a lot of hard work for next Olympic but next Olympic of 1944 were also cancelled by 2 world war . But he has iron will and even he became 38 year old now he has to compete from the young shooters in next Olympics of 1948 and he done a lot of hard work and in the Olympics he got the gold medal it was a windmill effect for spectators but only karoly knew the real story behind it.

He again done a laborious work for 1952 Olympics and it was a mesmerizing result because again he got gold medal and made history because he became first shooter to take consecutive gold medals in 25mtr. Air pistol so like karoly can't we take good achievements in student life instead of making excuses.

Ravindra Singh Janoti
Class 10

Sainiks

Indian soldiers are like boulders
Who stand shoulder to shoulder?
Forming a wall to protect us well
They sacrifice their enjoyment and fun
For our safe today for our happy tomorrow
They don't care their lives
Their children or wives
They protect our country
Working as centuries
They live away form their homes
In dark bunkers and domes
Not caring for heat or snow
Watching the activities of the war
It may be china or Pakistan
But their aim is to protect Hindustan. Jai Hind!!!!!

Mukesh Arya
Class 9

The Storm

Storm arrives proudly growling and roaring ;
In a peaceful city a very new morning.
It comes furiously shining it's claws;
Seeing this terrifying lion all get pause.
All get paused nobody talks ;
Only the terrifying lion proudly walks
.It only walks without any pity;
People are sobering of the city .
They are running here and there ;
But it is in vain as the lion is everywhere .
Suddenly the lion all it's aggressor;
And the city get totally clear .
The city changed into heaps of corpse ;
But the lion has no remorse.
Some became orphan some widow;
Of a peaceful city there is no omento.

Ravindra Singh Janoti
Class 10

Gandhi Ji's Talisman

I will give you a Talisman whenever you are in doubt or when the self becomes too much with you, apply the following test recall the face of the poorest and weakest man whom you may have seen and ask yourself if the step you completed is going to be any use to him will he gain anything by it? Will it rest is him to a control over his own life and destiny? In other word will it lead to Swaraj for the hungry and spiritually starving millions? Then you will find your doubts and yourself melting away.

Saurabh Singh Bohra
Class 12

Facts about Narendra Modi

- As a child Narendra Modi dreamt to serve in the Indian army. He wanted to study in sainik school located nearly jamanagar but couldn't join because there was no money to pay fees at home.
- At the age of 17 Modi decided to leave home for travelling across India. During this period he also visited the Himalayas.
- Surprised!! But true when he join RSS he first job with to mop floor at the Headquarters in Ahmedabad.
- Narendra was engaged to the local girl, jashodaben Narendra Bhai Modi while he was still a child.
- Wheather as a chief minister of Gujarat or now as a prime minister of India. Modi doesn't share his official residence with any of its family members not even with his mother.
- He is a great follower of swami vivekanand page to page.
- After president Obama, Modi is the world's most followed leader on twitter, accounting more than 12 million followers.
- During his 13 years of tenure as a Chief Minister of Gujarat he never took even a single holiday.
- Modi is fond of cleanliness and he has launched a mission - Swacch bharat mission to spread the awareness of cleanliness among the masses. He once quoted in one of the rallies "build toilets before temples".
- During his visit to Taiwan, someone asked to him wheather India was a land of snake charmer, to this he replied -India was now a land of the mouse. By he meant the computers mouse. Get it!!!!!

Anil Singh Pinari

Class 11

SAVE FOREST

What can be the solution?
For this dangerous pollution,
Coal is burnt &carbon increasing
More and more, more and more.
Vehicles give the global close,
Let us think a solution.
For this dangerous pollution,

ECO friendly things are the solution.
Our forest be the solution,
Deforestion be stopped.
Forestion be the solution,
So, we obey this solution.
For this dangerous pollution.

Parth Joshi
Class VII

Class 6th A

Class 6th B

Class 7th A

Class 7th B

Class 8th A

Class 8th B

Class 9th

Class 10th

Class 11th

Class 12th

शिक्षा का अधिकार अधिनियम २००९

'शिक्षा' किसी भी मानव के जीवन को सार्थक करने की दिशा में मुख्य भूमिका निभाती है। शिक्षा किसी भी मनुष्य के सर्वांगीण विकास में सहायक है । यदि भारत में शिक्षा के स्थिति पर दृष्टावलोकन करें तो हम पाते हैं कि भारत की स्थिति प्राचीन काल में एक विश्व गुरू की थी। समय के बदलते चक्र का ऐसा प्रभाव हुआ कि भारत में शिक्षा बिल्कुल निम्न स्तर पर आ गयी । स्वतंत्रता संग्राम में कई विद्वानों ने शिक्षा को महत्वपूर्ण मानते हुए इसके गिरते स्तर पर चिन्ता प्रकट की । भारत के स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात संविधान सभा ने शिक्षा को महत्वपूर्ण विषय स्वीकारा जिसके परिणामस्वरूप शिक्षा को संविधान के नीति निर्देशक तत्वों में शामिल किया गया।

आजादी के पश्चात कई वर्ष बीतने के बाद भी भारत में शिक्षा के स्तर में विशेष सुधार नहीं हुआ । इसके लिए कई कारक जैसे निर्धनता, रूढ़िवादी विचारधारा, लैंगिक असमानता एवम् संस्थागत कमियाँ आदि उत्तरदायी थे। जिससे ऐसे अधिनियम की आवश्यकता हुई कि प्रत्येक बच्चे को अनिवार्य रूप से शिक्षित किया जा सके।

इस प्रकार सरकार ने इसे जन सरोकारों से जुड़ा महत्वपूर्ण विषय मानते हुए संविधान के ८६वें संशोधन २००२ के द्वारा मौलिक अधिकारों में अनुच्छेद २१ को जोड़ा गया । जिसके परिणामस्वरूप निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिनियम २००९ पारित किया गया जो कि ०१ अप्रैल २०१० से लागू किया गया।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम २००९ वर्ष ०६ से १४ वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार देता है। साथ ही यह भी निश्चित करता है कि शिक्षा डर, दबाव व चिन्ता से मुक्त हो जिससे वर्ष २०२० तक भारत को ज्ञानवान समाज में रूपान्तरित किया जा सके।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम के प्रमुख प्रावधानों में निम्न बिन्दु शामिल हैं-

- सरकार का दायित्व है कि ०६ से १४ वर्ष तक की आयु वर्ग के प्रत्येक बच्चे को निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध करवाएं।
- उक्त आयुवर्ग के बच्चों को उनके नजदीकी सरकारी विद्यालय में प्राथमिक शिक्षा पूर्ण करने तक निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार होगा ।
- केन्द्र सरकार एक राष्ट्रीय ढांचा विकसित करेगी जिसमें बच्चों के चहुँमुखी विकास, संवैधानिक मूल्यों का विकास, शारीरिक एवं मानसिक मूल्यों का विकास, बाल-केन्द्रित व मित्रवत पद्धति से सिखाना और जहाँ तक हो निर्देश का माध्यम मातृभाषा हो।
- राज्य सरकार प्रत्येक बच्चे को निःशुल्क एवं अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराएगी। नजदीक में विद्यालय की उपलब्धता सुनिश्चित करेगी ताकि कोई गरीब वर्ग का बच्चा प्राथमिक शिक्षा से वंचित न रह सके।
- क्षेत्रीय अधिकारी प्रत्येक बच्चे को निःशुल्क एवं अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराएंगे एवं रिकॉर्ड रखेंगे।
- सबसे महत्पूर्ण प्रत्येक माता-पिता एवं संरक्षक का दायित्व है कि अपने बच्चों का प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध करवाना।
- विद्यालय व शिक्षकों का दायित्व है कि प्रवेश दिये गये सभी बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा देंगे । जिसमें २५ प्रतिशत कमजोर तथा वंचित वर्ग के बच्चे शामिल होंगे।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम की आलोचना इसके जल्दबाजी में बनाये जाने को लेकर की जाती है। इसमें शिक्षा की गुणवत्ता को ध्यान में नहीं रखा गया है। जिसका परिणाम प्राथमिक शिक्षा का गिरता स्तर है। जिस कारण अधिसंख्य माता-पिता का अपने बच्चों को निजी विद्यालयों में प्रवेश दिलाना है। निजी एवं धार्मिक अल्पसंख्यक विद्यालय प्रबंधन द्वारा

इस अधिनियम की कमियों का लाभ उठाया जा रहा है। ०६ वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए इस अधिनियम में कुछ भी नहीं है।

अन्त में, शिक्षा का अधिकार अधिनियम लागू होने से सत्य को नकारा नहीं जा सकता कि अशिक्षा को दूर करने की एक बड़ी चुनौती से तो निपट लिया गया है। परन्तु वर्तमान समय में बड़ी चुनौती इस अधिनियम को समुचित रूप से क्रियान्वित करने की है।

चेतन प्रकाश तिवारी
पी०जी०टी० वाणिज्य

"पृथ्वी और हम"

हमारे शास्त्रों में सबसे पहले पृथ्वी को ही नमन किया जाता है। "ऊँ भू भूर्भूव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात" का सीधा अर्थ सूर्य एवं पृथ्वी की स्तुति से है । शास्त्रों में उल्लिखित है तथा सनातन धर्म में भी कहा गया है "समुद्रवसने देवी पर्वतस्तन मण्डले विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्श क्षमस्वमे।" अर्थात् पृथ्वी तूने विशाल समुद्र व पर्वतों को सम्भाला हैं । मैं तुझे प्रणाम करता हूँ और तुझ पर पैर रखने से पहले क्षमा चाहता हूँ । हमारे धर्म शास्त्रों में पृथ्वी को पूजने की प्रथा शायद इसलिए तय की गयी थी कि हम हर पृथ्वी के उपकारों को याद रखें। भारतीय-संस्कृति व दर्शन में पृथ्वी एवं उसके उत्पादों का उल्लेख जमकर किया गया है पृथ्वी ने कई सदियां, संस्कृति व समाज को बदलते देखा है यह महान अखण्ड भू भाग निरन्तर सेवा में लीन है शायद इसी कारण इसके नमन को प्रथम स्थान मिला है।

परन्तु पिछले हजारों सालों में इस पृथ्वी के साथ यह नही हुआ जो पिछले सौ से दो सौ सालों में हुआ है अजीब सी बात है कि करोडों वर्षो में लगातार अपने सन्तुलन को बनाने और बचाने के भी जो रास्ते तैयार किये उन्हें हमने एक-एक करके ध्वस्त कर दिया है जैसे एक बड़े बाँध की योजना अपने निर्माण के दौरान ही लाखों करोड़ों वर्षो में पनपे स्थानीय परिस्थिति की तंत्र को स्वाहा कर देती हैं, नदियाँ मार दी जाती हैं, वनों को झील लील लेती हैं, पहाड़ डूब जाते हैं,गाँव गायब हो जाते है।

प्रकृति के साथ अब ऐसा व्यवहार अधिक दिन नहीं चलने वाला है टुकड़ों में धरती ने संकेत दे दिए हैं तमाम तरह की आपदाओं ने हमें घेरना शुरू कर दिया है इन संकेतों को गम्भीरता से समझने का समय आ चुका है हमारी मनमानी ज्यादा समय नहीं चलने वाली है। पृथ्वी किसी न किसी रूप में हमारे व्यवहार के लिए हमें दंडित तो करेगी ही पृथ्वी की चिंता को तो हम नकार सकते हैं। परन्तु अपने जीवन को संकट में डालने की हमारी हिम्मत नहीं है इसलिए अब हमें पृथ्वी बचाने से बेहतर स्वयं के जीवन को बचाने वाला होना चाहिए ।

श्री मुकुल कुमार पाल
पी०जी०टी०रसायन विज्ञान

शिक्षक(गुरू)

"गुरूर्ब्रहमा गुरू विष्णु गुरूर्देवो महेश्वराः।
गुरूर्साक्षात् परमंब्रह्म तस्मै श्रीगुरूवे नमः।।"

'शिक्षक' वह व्यक्ति है जो दूसरों को ज्ञान, योग्यता या मूल्य प्राप्त करने में मदद करता है। सामान्यतः शिक्षा देने वाले को शिक्षक कहते हैं। हमारे देश भारत में तो गुरू(शिक्षक)का स्थान ईष्वर से भी बड़ा बताया गया है। एक विद्यार्थी का विकास, उसकी भावी दिशा तथा समाज के भावी स्वरूप को निश्चित करने में शिक्षक का अमूल्य योगदान रहता है। विद्यार्थी जीवन को बनाने,संवारने में अध्यापक(शिक्षक)की भूमिका अहम हैं । भक्ति काल के कवि कबीरदास जी ने कहा है-

"गुरू कुम्हार सिख कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़े खोट।
अन्तर हाथ सहार दे, बाहर बाहे चोट"।।

कुछ ज्ञानी एवं महान लोगों ने भी शिक्षक शब्द को इस प्रकार अर्थित किया है-

- शि-शिखर तक ले जाने वाला ।
- क्ष-क्षमा की भावना रखने वाला ।
- क-कमजोरी दूर करने वाला ।

अर्थात्

जो विद्यार्थी की हर गलती को क्षमा करने की भावना रखता है और उसकी हर कमियों को दूर कर उसे शिखर (सफलता) तक ले जाता है, वही सच्चा शिक्षक कहलाता है ।

'शिक्षक' का दर्जा समाज में हमेशा से पूजनीय रहा है कोई उसे गुरू तो कोई अध्यापक,कोई आचार्य या टीचर कह कर पुकारते है और ये सभी शब्द सम्माननीय हैं। ये शब्द एक ऐसे व्यक्ति को चित्रित करते हैं जो सभी को ज्ञान देता है, सिखाता है और जिसका योगदान किसी भी देश या राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करना है। सही मायनों में कहा जाय तो एक शिक्षक ही अपने विद्यार्थी का जीवन गढ़ता है। शिक्षक ही समाज की आधारशिला है। एक शिक्षक अपने जीवन के अन्त तक मार्ग दर्शक की भूमिका अदा करता है और समाज को राह दिखाता रहता है इसी कारण शिक्षक को समाज में ऊँचा दर्जा दिया जाता है। हम सभी के जीवन में माता-पिता का स्थान सर्वोपरि है, इनका स्थान कोई भी नही ले सकता है परन्तु एक अध्यापक ही है जिसे भारतीय संस्कृति में माता-पिता के बराबर दर्जा दिया जाता है। क्योंकि शिक्षक ही हमें समाज में रहने योग्य बनाता है, इसी कारण शिक्षक को समाज का शिल्पकार कहा जाता है। शिक्षक का संबंध विद्यार्थी को केवल शिक्षा देने तक या पाठ्यक्रम पूरा करने तक ही नहीं रहता बल्कि वह अपने विद्यार्थी को हर मोड पर उसको राह दिखाता है, उसकी सभी विषयगत एवं अन्य व्यावहारिक कठिनाइयों को दूर करता है। उसके मन में उमड़े हर सवाल का जवाब देता है और विद्यार्थी के जीवन में आगे बढ़ने के लिए सही सुझाव देता है तथा सदा प्रेरित करता है। एक शिक्षक द्वारा अपने विद्यार्थी को विद्यालय में जो सिखाया जाता है या जो वह विद्यार्थी सिखता है। वह वैसा ही व्यवहार जीवनभर करता है। उसकी मानसिकता भी वैसी ही बन जाती है। भारत देश ही विश्व में एक ऐसा देश है यहाँ पर शिक्षक अपने विद्यार्थी को ज्ञान देने के साथ-साथ गुणवत्तायुक्त शिक्षा भी देता है जो कि विद्यार्थी में उच्च मूल्य स्थापित करने में बहुत उपयोगी है, किसी राष्ट्र का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास उस देश की शिक्षा पर निर्भर करता है। अगर राष्ट्र की शिक्षा नीति अच्छी है तो उस राष्ट्र को आगे बढने से कोई नहीं रोक सकता अगर राष्ट्र की शिक्षा नीति अच्छी नहीं होगी तो वहाँ की प्रतिभा दबकर रह जाएगी।

वेशक किसी भी राष्ट्र की शिक्षा नीति बेकार हो लेकिन एक शिक्षक बेकार शिक्षा नीति को भी अच्छी शिक्षा नीति में तब्दील करने का कौशल रखता है ।

शिक्षक के विषय में आचार्य चाणक्य ने भी कहा है- शिक्षक **कभी साधारण नहीं होता प्रलय और निर्माण उसकी गोद में खेलते है"** आचार्य चाणक्य के इस विचार से मैं भी पूर्णरूप से सहमत हूँ। एक शिक्षक द्वारा दी गयी शिक्षा ही शिक्षार्थी के सर्वांगीण विकास का मूल आधार है। प्राचीन काल से आज तक शिक्षा की प्रासंगिकता एवं उसकी महत्ता का मानव जीवन में विशेष स्थान है। शिक्षको द्वारा प्रारम्भ से ही पाठ्यक्रम के साथ ही साथ विद्यार्थी को उसके जीवन मूल्यों सभ्यता संस्कृति अनुशासन आदि की शिक्षा भी देता है शिक्षा हमें ज्ञान, विनम्रता, व्यवहार कुशलता एवं योग्यता प्रदान करती है। एक अबोध बच्चे को ज्ञान उसके माता पिता एवं उसका शिक्षक ही देता है- **"नीतिशतक में भतृहरि महोदय ने कहा है- ज्ञान के समान पवित्र कुछ नहीं है,** इस संसार में-

'नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।'

प्राचीन काल से ही शिक्षक को ईश्वर तुल्य माना है आज भी बहुत से शिक्षक शिक्षकीय आदर्शों पर चलकर एक आदर्श समाज की स्थापना में अपनी महती भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं लेकिन इसके साथ-साथ ऐसे शिक्षक भी है जो शिक्षक समाज एवं शिक्षा जगत को कलंकित कर रहे हैं । वर्तमान परिस्थितियों में एवं समयानुसार हम सभी शिक्षकों को एक अच्छा शिक्षक बनकर दिखाना है शिक्षक शब्द अपने आप में महत्वपूर्ण तो है ही इसके साथ-साथ चुनौतीपूर्ण और कठिन भी है परन्तु किसी भी स्थिति में असंभव तो कदापि नहीं हैं। अच्छा शिक्षक बनने के लिए कुछ आवश्यक शर्तें होती हैं। जिनको पूरा करने के लिए ही अच्छा शिक्षक बना जा सकता है वे सभी शर्तें है-संयम, सदाचार, विवेकी, सहनशीलता, सृजनशीलता, शुद्ध उच्चारणकर्ता,शोध-वृत्ति, प्रभावी वक्ता(प्रभावशालीवक्ता), सुन्दर लेखन, सभी कलाओं को जानने वाला, आकर्षक एवं सभ्य वेशभूषा एवं वर्तमान परिप्रेक्ष में विषयगत ज्ञान आदि अनेक ऐसी बातें हैं जो किसी भी शिक्षक को अच्छा शिक्षक बना सकती है ।निष्कर्षत: शिक्षक वह ज्ञान का पुंज होता है- जो बच्चों का सच्चा मित्र बनकर उसकी समृद्धि के लिए प्रयासरत है। वह ज्ञान और प्रकाश का अदभुत् स्रोत है। उसका सकारात्मक व्यवहार, स्पष्ट दृष्टिकोण उसके व्यक्तित्व की आवश्यक शर्तें हैं । हम सभी को ऐसा ही एक अच्छा प्रयास कर शिक्षक समाज को गौरवान्वित करना चाहिए।

कमान राम लोहिया
टी०जी०टी०संस्कृत

अरविन्द दर्शन

श्री अरविन्द का कहना है कि लक्ष्यहीन जीवन दुखी जीवन होता है। प्रत्येक का अपना लक्ष्य होना चाहिए। साथ-साथ यह भी स्मरण रखना चाहिए कि लक्ष्य के गुणों और उद्देश्य पर जीवन के गुण निर्भर हो ।जब व्यक्ति का लक्ष्य उच्च,विशाल उदार और निष्काम होगा तभी जीवन उसके अपने लिए और दूसरों के लिए बहुमूल्य होगा। इसप्रकार की चेतना या बुद्धि पाना ही पूर्णता है । अपनी पूर्णता पाने के लिए सबसे प्रथम सोपान है अपने विषय में सचेतन होना।

जीवन-विज्ञान के सन्दर्भ में श्री अरविन्द का चिंतन बौद्धिक-विकास से भी आगे विवेकवान होने की दिशा में बढ़ता दिखाई पड़ता है ।उनका विचार है कि अगर हम सचमुच उन्नति करना और अपनी सत्ता के सत्य को जानने की क्षमता प्राप्त करना चाहते हैं अर्थात् , उस एक बात को जान लेना चाहते हैं जिसके लिए वास्तव में हमने जन्म लिया है जिसे हम अपना उद्देश्य कह सकते हैं तो फिर जो चीजे हमारी सत्ता के सत्य का खंडन करती है उन सबको हम खूब नियमित रूप से और निरंतर होने वाली एक क्रिया के द्वारा अपने अन्दर से निकालते रहना होगा । बस इसी तरह धीरे-धीरे हमारी सत्ता के सभी भाग संघटित होकर हमारे चैतन्य केंद्र के इर्द-गिर्द एक पूर्ण सुसमंजस वस्तु का रूप ग्रहण करेंगे ।

इस सचेतनता को प्राप्त करने के लिए देश और काल के अंतर्गत बहुत सी पद्धतियाँ निश्चित की गई है और कुछ यांत्रिक भी हैं । सच पूछा जाए तो प्रत्येक मनुष्य को वह पद्धति ढूँढ़ निकालनी होगी जो उसके लिए सबसे अधिक उपयुक्त हो। यदि छात्र में सच्ची लगन और संकल्प हो तो यह निश्चित है कि वह एक न एक दिन वाह्य अध्ययन, उपदेश और अनुभव के

द्वारा आंतरिक एकाग्रता, ध्यान और दर्शन के द्वारा उस सत्य मार्ग को अवश्य प्राप्त करेगा जो लक्ष्य तक पहुँचने के लिए उसके लिए आवश्यक है। इसके लिए सबसे अधिक अनिवार्य है-संकल्प शक्ति। इस प्रकार की आंतरिक खोज के लिए मानसिक विकास अपेक्षित है। मानव मन अपनी दृष्टि में सीमित होता है उसे विशाल, विस्तृत, गंभीर और नमनीय बनाने के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक बात पर जितने –दृष्टिकोण से विचार करना संभव करेगा वह ईमानदारी के साथ उस पर चिंतन भी करे। निश्चित है, इस प्रयास से अर्थात् इस अभ्यास से एक ओर मन विकसित एवं संयमित होता है, दूसरी ओर मस्तिष्क का सुनियोजित विकास होता है। फलतः चेतना उर्ध्वमुखी होती है।

श्री अरविन्द ने अपने जीवन में चेतना को मुखर करने और उसे विकसित करने की अनेक प्रणालियों का प्रयोग किया है। उनका विचार है कि मन ज्ञान का यन्त्र नहीं है यह तो ज्ञान प्राप्त करने में असमर्थ है-बल्कि उसे स्वयं ज्ञान के द्वारा निर्देशित होना चाहिए। ज्ञान तो वह चीज है जो मानव मन के क्षेत्र से बहुत ऊपर है। मन को निश्छल-नीरव और सतर्क बनाना होगा ताकि वह ऊपर से ज्ञान ग्रहण कर सके और उसे अभिव्यक्त कर सके।

एक दूसरा अभ्यास है-अर्थात् अनुभूत प्रयोग है-जो चेतना की प्रगति में बहुत अधिक सहायक हो सकता है। उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहें छात्रों को जब कभी किसी विषय पर मतभेद हो, जैसे कि कोई निर्णय करते समय अथवा कोई कार्य पूरा करने के समय, तब हमें कभी अपनी धारणा या –दृष्टिकोण से चिपके नहीं रहना चाहिए, बल्कि हमें दूसरे के –दृष्टिकोण को समझने का प्रयास करना चाहिए। अपने आपको उसके स्थान पर रख देना चाहिए और तर्क-वितर्क यहाँ तक कि लड़ाई-झगड़ा करने के बदले एक ऐसा समाधान ढूँढ निकलना चाहिए जो दोनों पक्षों को युक्तिसंगत ढंग से संतुष्ट कर सके। सदइच्छा सम्पन्न मनुष्यों के लिए बराबर ही ऐसा एक समाधान तैयार रहता है। यदि यह अभ्यास शिक्षा-काल में ही छात्रों में हो जाये तो बहुत सी समस्याएँ अपने आप ही हल हो जाएगी। देश की संसद से सड़क तक आपसी सौहार्दता बनी रहें।

अंत में एक युक्तिसंगत और स्पष्टदर्शी शारीरिक शिक्षण के द्वारा हमें अपने शरीर को सुदृढ़ और सुकोमल बनाना चाहिए ताकि जो सत्य शक्ति हमारे अन्दर अभिव्यक्त होना चाहती है उसके लिए हमारा शरीर इस जड़ जगत के अन्दर एक उपयुक्त यन्त्र बना सकें, अर्थात् स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क हो सकता है। शिक्षा का मूल उद्देश्य यही है कि हम इस प्रकार की पूर्णता प्राप्त कर महाविद्यालय या विश्वविद्यालय से निकले कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में धैर्य एवं लगन के साथ अपना महत्तम योगदान कर सके। तब हम देखेंगे कि जिस जीवन-सत्य की खोज हम कर रहें है वह चार प्रधान तत्वों से बना है-प्रेम,ज्ञान,शक्ति और सौंदर्य। निश्चित ही सत्य के उक्त चारों रूप अपने आप ही हमारी सत्ता के अन्दर अभिव्यक्त होंगे।

विनायक भट्ट
टी०जी०टी०हिन्दी

वर्तमान शिक्षा एवं भविष्य

भारत जैसे अति जनसंख्या वाले देश को सतत विकास के मार्ग पर अग्रसर रहने हेतु चीन जैसे विशाल जनांकिकीय लाभांश वाले देश से सीख लेनी चाहिए। जैसा चीन के साथ देखने में आया कि एक समय उसने बडी तीव्र गति से विकास किया। उसके विकास के पीछे भी कहीं न कहीं उसकी उत्पादनकारी आयु समूह (कार्यशील जनसंख्या (१५-५९आयुवर्ग) का ही योगदान रहा। वैसा ही वर्तमान में भारत के सम्बन्ध में देखने को मिलता है, जहाँ इस समय कुल जनसंख्या का लगभग ६०.३(७२.९६ करोड़) हिस्सा उत्पादनकारी आयु समुह (working population) के अन्तर्गत है, जो वर्तमान में हो रही तीव्र विकास का सबसे बड़ा कारण है। १९७९ में चीन द्वारा अपनाई गई "एक बच्चा नीति" के चलते चीन आज बूढ़ा (आश्रित जनसंख्या) हो चला है।वहाँ उत्पादन की दर बड़ी धीमी पड़ चुकी है।वैश्विक स्तर पर वह पिछड़ता जा रहा है। भारत में भी जिस हिसाब से पिछले कुछ दशकों में जनसंख्या वृद्धि दर में नियन्त्रण किया गया है उसे देखते हुए अनुमान लगाया जा सकता है कि जनसंख्या भी उतनी तेजी से नहीं बढने वाली है जितनी कि पिछले ४-५ दशकों से बढ़ती चली आ रही है। इससे स्पष्ट होता है कि हम भी आने वाले कुछ दशकों में उतनी गति से विकास नहीं कर पायेंगे ,जितना की हमें वर्तमान में लाभ मिल रहा है। लेकिन हमारा मजबूत पक्ष यह है कि हमारी जनसंख्या का बड़ा भाग आने वाले दशकों में बूढ़ी होगी तो जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा लगभग ३७.५१ करोड़ (वर्तमान में ०-१४ आयुवर्ग का हिस्सा

(वर्तमान जनसंख्या का ३१प्रतिशत) तब की कार्यशील जनसंख्या (working population) होगी। तब तक इसमें और भी इजाफा होगा। लगभग ३-४ दशक के बाद देश के विकास की सबसे बड़ी चुनौती वर्तमान में स्कूलों में पल रहा देश का भविष्य है। 'दशकों बाद क्या होगा ये वर्तमान तय करता है' यह कथन सृष्टि के हर चीज़ पर लागू होती है।चाहे आप, मैं, जमीन के अंदर पड़ा कोई बीज (उपजाऊ या ऊसर भूमि पर)या जमीन पर पड़ा कोई पत्थर (नींव बनेगा या मूर्ति या फिर समन्दर की रेत) इन सबका वर्तमान और उसका भविष्य तय करता है । देश की इस जनसंख्या के बड़े हिस्से को सही दिशा दी जाए ताकि हम भी मानव विकास के उस स्तर से आगे निकल जाएं जो नार्वे, स्वीडन जैसे देश छू चूके हैं। लेकिन इस कार्य में अगर हमसे जरा- सा भी चूक हुई तो देश का बड़ा हिस्सा इस देश पर बोझ बन जाएगा। हमारी गिनती कुपोषित, नशेडी, रुग्णता से ग्रसित, बिमारू अर्थव्यवस्था वाले देशों में होने लगेगी। इस तरह वर्तमान शिक्षा व्यवस्था तय करेगी आने वाले भारत की तकदीर। इसलिए हम सब की (केवल अध्यापक की ही नहीं) जिम्मेदारी बनती है कि हम सब -एक अच्छे अभिभावक, एक भाई-बहन, दोस्त, पड़ोसी, रिश्तेदार, सहपाठी, एक अध्यापक, हम सबकी जिम्मेदारी बनती है कि हम अपने इन नन्हें बच्चों को भविष्य की सही शिक्षा दें। बच्चा समाज से सिखता है,और हम सभी समाज के अंग हैं। इस संसार को छोड़कर जाना वाले व्यक्ति का मृत शरीर भी बच्चे को सिखा जाता है।जैसे बुद्ध का पूरा जीवन एक शवयात्रा, एक वृद्ध जीर्ण शरीर आदि कुछ सत्य घटनाओं ने बदल दिया जिनसे उनको अनभिज्ञ रखा गया था। ठीक उसी तरह एक बच्चे के जीवन को कोई भी साधारण सी लगने वाली घटना बदल सकती है जिससे वह अनजान है। इसलिए सत्य का बोध कराना समाज के हर हिस्से का कर्त्तव्य है। हम सभी का दायित्व है कि वह देश के इन नन्हें भविष्य के साथ अच्छे से पेश आएं जिससे वह आपसे कुछ सीख सके।

मनोज देवराड़ी
पी०जी०टी० भूगोल

गरीबी (निर्धनता)

बच्चा तरसता रोटी को,
माँ रोटी बनाने में सोचती।
पिताजी सोचते,
इतने से हो जायेगा क्या ?
जो इस मानसिकता से ऊपर है,
वे निर्धन नहीं हैं।

एक दिन कक्षा में बच्चों से निर्धनता पाठ पढ़ाते हुए पूछा कि किसने गरीब देखा ?अधिकतर बच्चों ने जबाब दिया। लेकिन एक ने यहाँ तक कह दिया कि हमने तो आज तक कोई गरीब नहीं देखा, बाकि के उत्तर भी तर्क संगत नहीं थे।यह विचित्र स्थिति है कि गरीब बच्चों को भी गरीबी का पता नहीं है । और अमीर पता भी क्यों करें?

ऐसे में हम गरीबी दूर करने की कोई न्यायोचित योजना बना भी लें तब निष्कर्ष काल्पनिक ही रहेंगें।इस स्थिति में यह प्रश्न निश्चित रुप से उठता है कि गरीब की परिभाषा का स्वरुप ऐसा होना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति उसको मन मस्तिष्क से धारण कर सकें और स्वयं को अपराध-बोध हो कि गरीब हमारे कारण गरीब तो नहीं?

अब आप सोच में पड़ गए होगें, ऐसे गरीब कहां मिलेंगे,बस !एक बार मेरी तरह देखना पड़ेगा।

मैंने देखी है, रातों की गतिशीलता,
चिड़ियों का घोंसला, कुत्तों का भौंकना,
गलियों, फुटपाथ पर सोना,
अस्पतालों में फूट-फूट कर रोना,
काली-रात, झर-झर करती चाँदनी,
ओस के बूंद सी सिमटती जिंदगी, मैंने देखी है।

ललित जोशी
पी०जी०टी० अर्थशास्त्र

स्वच्छ भारत अभियान

भारत के सर्वश्रेष्ठ प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने महात्मा गाँधी जी की जयंती २ अक्टूबर २०१४ के उपलक्ष में स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की थी। यह हमने स्वच्छ भारत अभियान के उपर लिखा है, तो चलिए नीचे अब इस निबन्ध को पढ़ते हैं।वैसे तो स्वच्छ भारत अभियान को स्वच्छ भारत मिशन और स्वच्छता अभियान भी कहा जाता है।स्वच्छ भारत अभियान एक राष्ट्रीय स्तरीय अभियान है।महात्मा गाँधी जी की १४५वीं जयंती के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने इस अभियान के आरंभ की घोषणा की है। यह अभियान प्रधानमंत्री जी की महत्वकांक्षी परियोजना में से एक है।

२ अक्टूबर २०१४ को उन्होंने राजपथ पर जनसमूह को संबोधित करते हुए सभी राष्ट्रवासियों से स्वच्छ भारत अभियान में भाग लेने और इसे सफल बनाने को कहा है। साफ-सफाई के संदर्भ में देखा जाए तो यह बयान अब तक का सबसे बड़ा स्वच्छता अभियान है। साफ सफाई को लेकर दुनिया भर में भारत की छवि बदलने के लिए हमारे प्रधानमंत्री जी बहुत गंभीर हैंय उनकी इच्छा स्वच्छ भारत अभियान को एक जन आंदोलन बनाकर देशवासियों को गंभीरता से इससे जोड़ने की है।हमारे प्रधानमंत्री जी ने २ अक्टूबर के दिन सर्वप्रथम गांधी जी को राजघाट पर जाकर श्रद्धांजलि अर्पित की और फिर नई दिल्ली स्थित वाल्मीकि बस्ती में जाकर झाड़ू लगाई।कहा जाता है कि वाल्मीकि बस्ती जिले में गांधीजी का सबसे खुश इंसान था वह यहाँ आकर ठहर थे। अब समय आ गया है कि हम सवा सौ करोड़ भारतीय अपनी मातृभूमि को स्वच्छ बनाने का प्रण करें। क्या साफ-सफाई केवल सफाई कर्मचारियों की जिम्मेदारी है? क्या यह हम सभी की जिम्मेदारी नहीं हैं हमें यह नजरिया बदलना होगा मैं जानता हूं कि इसे केवल एक अभियान बनाने से कुछ नहीं होगा। पुरानी आदतों को बदलने में समय लगता है यह मुश्किल काम है मैं जानता हूँ लेकिन हमारे पास वर्ष २०१९ तक का समय है।

प्रधानमंत्री जी ने ५ साल में देश को साफ सुथरा बनाने के लिए लोगों को शपथ दिलाई कि ना मैं गंदगी करूँगा और ना ही गंदगी करने दूंगा। अपने साथ में १०० लोगों को साफ सफाई के प्रति जागरुक करूंगा और उन्हें सफाई की शपथ दिलवाऊँगा। उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति साल में १०० घंटे का श्रम दान करने की शपथ ले और सप्ताह में कम से कम २ घंटे सफाई के लिए निकालेंय अपने भाषण में प्रधानमंत्री ने स्कूलों में गाँव में शौचालय-निर्माण की आवश्यकता पर भी जोर

दिया। स्वच्छ भारत अभियान को पूरा करने के लिए ५ वर्ष (२ अक्टूबर २०१९) तक की अवधि निश्चित किए गई है। इस अभियान पर लगभग दो लाख करोड़ रुपए खर्च होने का अनुमान लगाया गया है। इसके अंतर्गत ४०४१ शहरों को सम्मिलित किया जाएगा। इस अभियान की सफलता को सुनिश्चित करने के लिए, पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय १ लाख ३४ हजार करोड़ और केंद्रीय शहरी विकास मंत्रालय ६२ हजार करोड़ की आर्थिक सहायता प्रदान करेंगे।

इसके साथ ही केंद्रीय मंत्री श्री नितिन गडकरी ने क्लीन इंडिया कैंपेन के तहत प्रत्येक ग्राम पंचायत को सालाना २० लाख रुपए देने की घोषणा की है। यह अभियान अभी प्रारंभिक चरण में ही है लेकिन सरकारी प्रयासों से यह आभास हो रहा है कि सरकार इस अभियान को निर्धारित समयावधि में पूर्ण करने के लिए प्रतिबद्ध है। इस अभियान के प्रति जनसाधारण को जागरुक करने के लिए सरकार समाचार-पत्रों, विज्ञापनों आदि के अतिरिक्त सोशल मीडिया का भी उपयोग कर रही है।

क्लीन इंडिया नाम से एक नई वेबसाइट की भी शुरुआत की गई है और फेसबुक जैसे प्रसिद्ध नेटवर्किंग साइट के माध्यम से भी लोगों को इस से जोड़ा जा रहा है ट्विटर पर भी माइक्रो इन इंडिया के नाम से एक ट्विटर हैंडल का अकाउंट का भी शुभारंभ किया गया है। प्रत्येक नागरिक की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए प्रधानमंत्री जी ने सभी से अपील की है कि लोग पहले गंदी जगह की फोटो सोशल नेटवर्क साइट पर अपलोड करें और फिर उस स्थान को साफ करके उसकी वीडियो तथा फोटो भी अपलोड करें इस अभियान में प्रधानमंत्री जी ने मशहूर हस्तियों को भी शामिल किया है उन्होंने इसके लिए ९ लोगों को नॉमिनेट भी किया है।

कुछ साल पहले इंटरनेशनल हाइजीन काउंसिल ने अपने एक सर्वे में यह कहा था कि औसत भारतीय घर बेहद गंदे और अस्वास्थ्यकर होते हैं। इस सर्वे में काउंसिल ने कमरों, बाथरुम और रसोई घर की साफ-सफाई को आधार बनाया था। उसके द्वारा जारी गंदे देशों की सूचना में सबसे पहला स्थान मलेशिया और दूसरा स्थान भारत को मिला था।वर्तमान समय में स्वच्छता हमारे लिए एक बड़ी आवश्यकता है। यह समय भारतवर्ष के लिए बदलाव का समय है बदलाव के इस दौर में यदि हम स्वच्छता के क्षेत्र में पीछे रह गए तो आर्थिक उन्नति का कोई महत्व नहीं रहेगा। हाल ही में हमारे प्रधानमंत्री जी ने २५ सितंबर २०१४ को "मेक इन इंडिया" अभियान का भी शुभारंभ किया इसका लक्ष्य भारत को मैन्युफैक्चरिंग के क्षेत्र में अव्वल बनाना है। इस अभियान से अधिक गति तो अवश्य मिलेगी लेकिन इसके साथ ही हमें प्रदूषण के रूप में एक बड़ी चुनौती भी मिलने वाली है हमें अपने दैनिक जीवन में तो सफाई को एक मुहीम की तरह शामिल करने की जरूरत है साथ ही हमें इसे एक बड़े स्तर पर भी देखने की जरूरत है ताकि हमारा पर्यावरण भी स्वच्छ रहे।

स्वच्छता समान रुप से हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है। हर समय कोई सरकारी संस्था या बाहरी वह हमारे पीछे नहीं लगा रह सकता। हमें अपनी आदतों में सुधार करना होगा और स्वच्छता को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाना होगा हालांकि आदतों में बदलाव करना आसान नहीं होगा लेकिन यह इतना मुश्किल भी नहीं है। प्रधानमंत्री जी ने ठीक ही कहा कि जल्दी हम कम से कम खर्च में अपनी पहली ही कोशिश में मंगल ग्रह पर पहुँच गए तो क्या हम स्वच्छ भारत का निर्माण सफलतापूर्वक नहीं कर सकते हैं।

कहने का तात्पर्य है कि क्लीन इंडिया का सपना पूरा करना कठिन नहीं हमें हर हाल में इस लक्ष्य को वर्ष २०१९ तक प्राप्त करना होगा तभी हमारी ओर से राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी व उनकी १५०वीं जयंती पर सच्ची श्रद्धांजलि दी जा सकेगी।

रुपाली प्रसाद
टी०जी०टी० सामान्य

जीवन में कला का महत्व

कला की साधारण शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में कला के प्रति प्रेम उत्पन्न करना है। कला के द्वारा उन्हें अपने जीवन की तैयारी में भी सहायता मिलती है, और वे अच्छे नागरिक बनने की ओर अग्रसर होते हैं। बहुत से लोग केवल ड्रॉइंग और पेंटिंग को ही कला समझते हैं। परन्तु कला का क्षेत्र विशाल है। और किसी भी मानवीय सुन्दर रचना को कला कहा जा सकता है।

चित्र बनाने में स्वच्छता, स्वाभाविकता, रेखाओं की सुडौलता, उचित आकार, अनुपात, भावों का संयोजन संतुलन तथा रंगों की उत्तम मिलावट आदि सभी बातों का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।

'न तज्ज्ञानं न तच्छिल्यं न सा विद्या, ना सा कला' अर्थात् ऐसा कोई ज्ञान नहीं, कोई शिल्प नहीं, कोई विद्या नहीं जो कला ना हो।

हेम चंद्र चौधरी
टी०जी०टी० कला

Corbett House (Boys)

Corbett House (Girls)

Gangotri House (Boys)

Gangotri House (Girls)

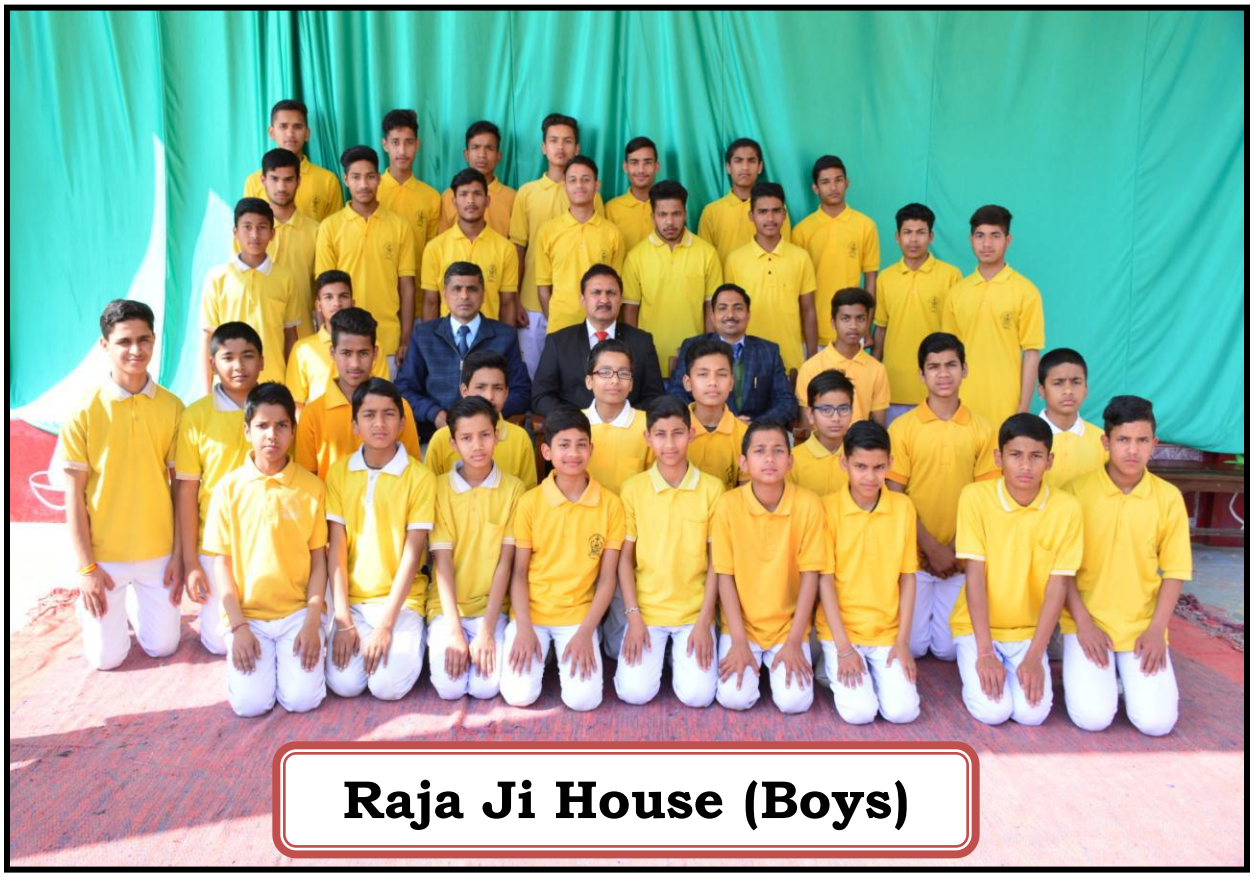

Raja Ji House (Boys)

Raja Ji House (Girls)

Nanda House (Boys)

Nanda House (Girls)

Importance of Computer Education in Schools

The modern life of today includes information and contacts with people all over the world. Computer has helped considerably to achieve this. This is possible through computer education when a person knows the use of computer, he can employ in his business. The internet helps to have contact with any one in any part of the world. Today, by the help of internet, business has progressed very much.

The uses of computers and internet are growing day by day. In almost all the companies, business, schools are using computers for various operations. New approaches and tech tools are coming that help students to learn better.

Computer education in schools plays important role in students' career development.Internet the most powerful device helps students to learn new skills and more advanced version of current lessons. Computers help students to draw the creativity and explore their skills. Computers and the internet not only help students to explore creativity and imagination but also help to understand technologies.

We give lot of priority to our school education then, why not to computer education? Computer education in school is also equally important to build up a strong career. It is a technical knowledge which helps us to choose a good career. In today's world it is difficult to acquire appropriate job only with regular education, we also need computer knowledge. Today we have lot of computer courses like Accounting, Software courses, Multimedia courses, Hardware & Networking, CAD courses etc.To keep up the pace with in this fast life of today, computer education is extremely important. Computers are an integral part of life and so is computer education! At least now let us understand the true need of computer education and support to our children, youths as well as all regardless of age to pursue computer education.

R.C.Sanwal
P.G.T. Computer Sc.

Short Trick To Find The Day Of The Given Date

Step I – Year= 100C+Y , C≥16 and 0≤Y≤100.

Example 1966= 100*19+66,C=19 and y=66.

Step II - Find = date +[(2.6)*M-0.2](only whole part) – 2*C +Y + [C/4](only whole part)+[Y/4](only whole part).

Step III - M represent month and March is taken as the first month of the year and January and February are assumed to be 11^{th} and 12^{th} month of previous year.

Step IV – Now we divide whole value by 7 and find Remainder.

Step V – if Remainder is 0=Sunday ,if Remainder is 1=Monday,if Remainder is 2= Tuesday,if Remainder is 3= Wednesday ,if Remainder is 4= Thursday ,if Remainder is 5= Friday ,if Remainder is 6=Saturday .

Example - November 11, 1918 (1918=100*19+18)

C=19, Y=18, M=9

Now =11+[2.6*9-0.2]-2*19+18+[19/4]+[18/4]

=11+[23.4-0.2]-38+18+[4.7]+[4.5]

=11+[23.2]-20+4+4

=11+23-20+8

=22

When we divide 22 by 7 we get remainder 1

So the day is Monday.

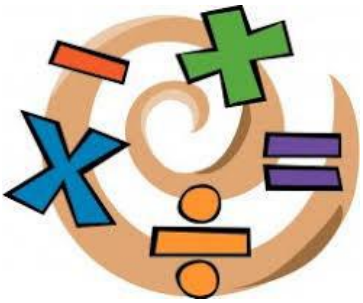

Disha Tripathi
T.G.T. Maths

"Humility: The mother of all virtues"

It's so hard to be humble. Here are the tips for taming your EGO.

In light of the upcoming stressful race and the increase in narcissism amongst our youth, I think it's safe to say that, as a society, we could use a little more humility.

Our culture places so much value on external accomplishments, appearance, and self-aggrandizement—all things that are ephemeral at best—that even a small display of this quiet virtue can make one feel like a drowning man coming up for air.

Why is humility good?

When I meet someone who radiates humility, my shoulders relax my heart beats a little more quietly, and something inside me let's go.

Why? Because I know that I'm being fully seen, heard, and accepted for who I am, warts and all—a precious and rare gift that allows our protective walls to come down.

Truly humble people are able to offer this kind of gift to us because they see and accept their own strengths and limitations without defensiveness or judgment—a core dimension, according to researchers, of humility, and one that cultivates a powerful compassion for humanity.

This kind of self-acceptance emerges from grounding one's worth in our intrinsic value as human beings rather than things such as six-figure salaries or the body of a movie star or climbing the corporate ladder or the number of friends on Facebook. Instead, humble people place high value on more meaningful things that benefit others, such as noble qualities.

They also see life as a school, recognizing that while none of us is perfect, we can, without negatively impacting our self-esteem, work on our limitations by being open to new ideas, advice, and criticism.

This ability alone cultivates an awe-inspiring inner strength, the most powerful example of which is Gandhi, whose *Autobiography* is a journey of humbling self-dissection. He once famously said, "I claim to be a simple individual liable to err like any other fellow mortal. I own, however, that I have humility enough to confess my errors and to retrace my steps."

If Gandhi is an example of what a humble leader can accomplish, then society serves to benefit from this kind of governance. Consider what researchers of the "quiet ego"—a construct similar to humility—suggest happens when we gain control of our ego: we become less likely to act aggressively, manipulate others, express dishonesty, and destroy resources. Instead, we take responsibility for and correct our mistakes, listen to others' ideas, and keep our abilities in humble perspective.

Who wouldn't want that kind of leadership for our country—and the world?

But the benefits of humility do not extend to just our leaders. Nascent research suggests that this lovely quality is good for us individually and for our relationships. For example, humble people handle stress more effectively and report higher levels of physical and mental well-being. They also show greater generosity, helpfulness, and gratitude—all things that can only serve to draw us closer to others.

Three tips for cultivating humility

Here are some scientifically-based ways to develop a quiet, understanding, and compassionate heart with humility.

1. Embrace your humanness

For many, when we fail at something that is important to us—an exam, a job or a relationship, for example—our self-esteem plummets because we tied our self-worth to those things. All of a sudden, we become bad or unworthy people, and it can be a long road to recovery.

Not so for people with humility. As stated earlier, their ability to withstand failure or criticism comes from their sense of intrinsic value of being human rather than outer means. So when they fail at a task, it doesn't mean that there is something wrong with them. It just means that they are human like the rest of us.

Scientists suggest that this intrinsic value stems from secure attachment, or the healthy emotional bond formed with close others. One study found that a whopping 40 percent of adults are not securely attached, but thankfully this does not mean we are doomed. We can heal through healthy adult relationships, such as friends, romantic partners, or even with a higher power.

2. Practice mindfulness and self-compassion

In recent years, mindfulness and self-compassion have been linked to greater psychological resilience and emotional well-being. And I can't imagine developing humility without them.

According to scientists, humble people have an accurate picture of themselves—both their faults and their gifts—which help them to see what might need changing within.

Mindfulness grows our self-awareness by giving us permission to stop and notice our thoughts and emotions without judgment (if we judge what's going on inside us, we paint a distorted view of ourselves).

The more we become aware of our inner lives, the easier it is to see where unhealthy beliefs and actions might be limiting us. Noticing and then accepting those parts of ourselves that are wreaking havoc and that require us to change calls for self-compassion, or treating oneself with kindness and understanding.

Once we accept what needs changing, then we can start the process of transformation. I love the saying by a wise sage, "If you are in a dark room, don't beat the darkness with a stick. Rather, turn on the light." In other words, just gently and patiently replace a negative thought or action with a positive one and over time, we may not even recognize the person we once were.

3. Express gratitude

Saying "thank you" means that we recognize the gifts that come into our lives and, as a result, acknowledge the value of other people. Very simply, gratitude can make us less self-focused and more focused on those around us—a hallmark of humble people.

Indeed, a recent study found that gratitude and humility are mutually reinforcing. Expressing gratitude can induce humility in us, and humble people have a greater capacity for conveying gratitude.

Perhaps the key to humility is seeing life as a journey towards cultivating those qualities that bring out the best in ourselves and others and make this world a better place.

Here I am going to close with the words of one who was a role model of humility, Nelson Mandela:

As I have said, the first thing is to be HONEST WITH YOURSELF. You can never have an impact on society if you have not changed yourself...Great peacemakers are all people of integrity, of honesty, and HUMILITY.

Vishal Munjal
T.G.T. Science

English Phobia.....

A very common word that we generally hear in day today life .English had become a hard nut to crack for most of the people. It is a common scenario that people have fear to speak publically even though they have sound knowledge of every if & but .They always go with the fear that they could make a mistake. I want to go with some of the common tips, if it works to improve your English and to help you to come out from the very hitch.

⇒ The very basic funda is to leave the fear aside that you can make mistakes. Don't be afraid to make mistake. Be confident .People can only correct your mistakes when they hear you make them. Keep one thing in mind that nobody is perfect in this world. Languages are for to communicate with others, so if you are able to pass your thoughts to others, it means you are on right path.

⇒ A second thing is environment. Surround yourself in English. Put yourself in an English speaking environment where you can learn passively. The best way to learn in through speaking.

⇒ The third thing goes with the practice. Make a study plan. Establish a routine. Make English a part of your life. I am not going to speech you with

stories of hard work and practice. Leaving this all on you because the fruits you are going to have even after three or four days would surprise you.

⇒ Practice four core skills-Reading, Writing, Speaking & listening. They all need to be worked on for you to improve.

⇒ I suggest you to keep a note book of new words you learn. Use them in sentences and try to say them at least three times when you speak. It will make you familiarize with new words.

⇒ Memorization of lists is one of the most common ways of learning vocabulary for a test. It's only a good exercise for short term studying because you often do not retain the information that you have learned for a test.

⇒ Select your own time to study. Use your body clock. If you are not a morning person, study in the afternoon. I mean to say feel comfortable.

⇒ You will find words easier to remember if you learn them by making sentences rather than remembering the words.

⇒ Judge yourself by taking tests .A person work harder when you need to study for something.

⇒ Give yourself a short term goal & focus on working towards it. Prize yourself when you overcome.

⇒ Don't shy of taking helps. Go for that if you need.

⇒ Review the things that you have studied earlier whenever you get time.

⇒ Don't make it a fatal for you. Take regular breaks, enjoy learning.

⇒ Don't be in a hurry. Concentrate on your strength. It is the power that only you know.

⇒ Watch recorded Things for your practices rather than T.V. as you can watch that over and over again.

⇒ Reading is good and you should read as much you can but it should be the graded one. Children book like Champak and others can be the best alternatives for the beginners.

⇒ If you are confused with a word, and you don't understand that in a sentence, look at the other one it will provide you a help or a hint.

⇒ Root words help you guess the meaning so try to make a collection of these. For example- scrib-write, min- small.

⇒ If you have learnt a word then go for its other forms. As Beautiful (adjective). Beauty (Noun), beautifully (adverb).

⇒ Learn the Prefixes (dis , un, re) Suffix (ly, ment ,full) it will help you to figure the words and build your vocabulary.

⇒ Translation from Hindi to English is a gone off thing. Now try to think in English if you want to have the improvement.

⇒ English comes in hands with practice only.

⇒ Start writing online blog and share. Don't hesitate as there are many like you and more to say worse than you.

⇒ Sing your heart out! Show the world your beautiful voice. Learn English songs & sing along with them to improve fluency & intonation.

⇒ Record your voice and use that for improvement.

⇒ Try to find out Passive constructs. It is possibly can be done through newspaper. Read an article & try to find out the passive sentences.

⇒ Keep an English diary, English in the sense that nothing other should be there, write a few sentences daily, and then get into the habit of it, aiming to the maximum.

⇒ To become a better writer brainstorm as many ideas and thoroughly onto paper without worrying about grammar or spellings. Then think about the structure, after that write that again using good grammar & spelling. Finally read it through or give it to someone else to check for mistakes.

⇒ Listen to few sentences through English C.D. or through any other mean, and then repeat what you heard. Focus on the rhythm & intonation.

⇒ Keep an English dictionary as it will help you to keep thinking in English.

⇒ Don't become too reliant on your dictionary. It should be an aid, not your main teacher. Try to guess the meaning of the words rather than going straight for it.

⇒ Don't give up! Stay positive! Sometimes you will feel that you aren't learning quickly enough. Everyone feels like this, don't worry about it. You will get there in the end, be sure of it.

⇒ Enjoy your learning; we learn when we are having fun.

⇒ If you get nervous while speaking take two deep breaths before you say something. You'll speak better when you feel relaxed.

⇒ Keep yourself motivated by looking back at your text books you used in past. You will be surprised at how easy they seem to you. My mom says I was not able to spell spelling of days even when I was in class 9^{th}. It is better to start at any time.

⇒ You are never too young nor too old to start learning. Don't make wrong excuse to learn. What you are waiting for.

⇒ Procrastination can stop you from being successful. To stop it, it's important you understand if your procrastinating is to avoid studying, or if it is your bad habit.

⇒ Don't worry if you are not getting the same result as you have desired or you wanted yet, it is not because you are bad at languages. It's because you have not found your special way of learning.

⇒ You must use the resources which match your level, don't use text or anything which are too difficult or too easy. You materials which challenge you but don't frustrate you.

⇒ Don't worry about making your accent perfect. It's an important part of your cultural identity to keep your accent. Native English speakers enjoy hearing English spoken with an accent.

⇒ There are many types of English: British, American, South African and so on. None of these are wrong or not so important. English is English.

⇒ Instead be aware of the difference in American & British English and try to use it accordingly. But don't make it a burden on your mind. For example elevator (US)/ lift (English).

⇒ Use your intuition. Go with your gut feeling. You will be surprised how often your first guess is the right guess. Like I said before, be confident.

⇒ Gather your thoughts. Take a second to think about what you are going to say.

⇒ Conversation in a group is a thing that can help a lot. Meet new people. Make the efforts to mix with English speakers in your town. The more you can do is to look and join those places where foreigners hang out.

⇒ Start yourself the conversation in English. Don't wait for the others to take the initiative. Try to keep the conversation moving & use listening words (Really? /go on / what happened then) . Don't wait for others to speak to you. Get in there by yourself.

⇒ Debate is a help for this. Discuss topics in group. Each person should choose a view point. (Even if you don't agree with it) and debate it within the group. Make sure you get your point across. Learn to listen activity. Active listening will help in the class room and it will help you get more out of and contribute more to group study occassion. Focus on the speaking person. Don't get distracted. Keep your eyes and ears open.

⇒ The most important is don't try to be a parrot.

⇒ Use of tense should be clear at all.

⇒ And the most important- Don't get disheartened. Remember as long as you have tried your hardest, you have succeeded.

R Saxena
T.G.T. English

Nanotechnology

Nanotechnology ("nanotech") is manipulation of matter on an atomic, molecular, and supramolecular scale. The earliest, widespread description of nanotechnology referred to the particular technological goal of precisely manipulating atoms and molecules for fabrication of macroscale products, also now referred to as molecular nanotechnology. A more generalized description of nanotechnology was subsequently established by the National Nanotechnology Initiative, which defines nanotechnology as the manipulation of matter with at least one dimension sized from 1 to 100 nanometers. This definition reflects the fact that quantum mechanical effects are important at this quantum-realm scale, and so the definition shifted from a particular technological goal to a research category inclusive of all types of research and technologies that deal with the special properties of matter which occur below the given size threshold. It is therefore common to see the plural form "nanotechnologies" as well as "nanoscale technologies" to refer to the broad range of research and applications whose common trait is size.Scientists currently debate

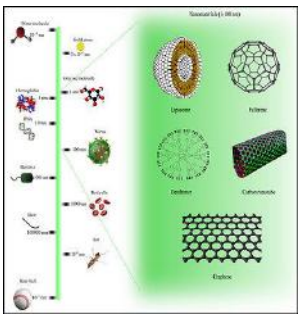

the future implications of nanotechnology. Nanotechnology may be able to create many new materials and devices with a vast range of applications, such as in nanomedicine, nanoelectronics, biomaterials energy production, and consumer products. On the other hand, nanotechnology raises many of the same issues as any new technology, including concerns about the toxicity and environmental impact of nanomaterial and their potential effects on global economics, as well as speculation about various doomsday scenarios.Nanotechnology may have the ability to make existing medical applications cheaper and easier to use in places like the general practitioner's office and at homeCars are being manufactured with nanomaterials so they may need fewer metals and less fuel to operate in the future.

Scientists are now turning to nanotechnology in an attempt to develop diesel engines with cleaner exhaust fumes. Platinum is currently used as the diesel engine catalyst in these engines. The catalyst is what cleans the exhaust fume particles. First a reduction catalyst is employed to take nitrogen atoms from NOx molecules in order to free oxygen. Next the oxidation catalyst oxidizes the hydrocarbons and carbon monoxide to form carbon dioxide and water. Platinum is used in both the reduction and the oxidation catalysts. Using platinum though, is inefficient in that it is expensive and unsustainable.Nanotechnology also has a prominent role in the fast developing field of Tissue Engineering. Researchers have successfully used DNA origami-based nanobots capable of carrying out logic functions to achieve targeted drug delivery in cockroaches. It is said that the computational power of these nanobots can be scaled up to that of a Commodore. Nanofibers are used in several areas and in different products, in everything from aircraft wings to tennis rackets. Inhaling airborne nanoparticles and nanofibers may lead to a number of pulmonary diseases, e.g. fibrosis.Health found lab mice consuming nano-titanium dioxide showed DNA and chromosome damage to a degree "linked to all the big killers of man, namely cancer, heart disease, neurological disease and aging".The Center for Nanotechnology in Society has found that people respond to nanotechnologies differently, depending on application – with participants in public deliberations more positive.about nanotechnologies for energy than health applications – suggesting that any public calls for nano regulations may differ by technology sector.

Sanjay Rawat
P.G.T. Physics

Biodiversity: A large variety of specieswithin an Ecosystem or habitat

Biodiversity is many things
Birds, trees, flowers,
Everything helps everything
Sit and watch for hours

Robins, sparrows,mallards,and blackbirds
Are all a part of it too
Seems like you could put it all into words
But then you don't want to

Why make something lose its beauty
Just so you can say
I went walking through the city
And saw a flower today?

Many words can not express
The way nature enriches lives
We can put it to the test
We can see how much it thrives

Animals are quickly disappearing
And cultures, one per week
The songbird's song we won't be hearing
What would they say if they could speak?

Arrow leaved balasmroot
And little grass widows
Nature in many ways it cute
I hope it never goes

Nature is beautiful in many ways
But humans can ruin it so switfly
Nature isn't seen much these days...

Shalini Singh
P.G.T. Biology

Uttarakhand Traditional Music

The musical forms of Uttarakhand add a lot to its cultural richness. The state is widely known for giving rise to many different types of folk music forms. The folk music in the state has been inspired by the natural beauty of the region. The feel and touch of nature can definitely be felt as you listen to the folk musical tones and music in different parts of the state of Uttarakhand. You can listen to folk music mainly during the festival season or when religious traditions are performed. These songs speak volumes of how rich and wide the state's cultural heritage is.

Folk songs in the state can be divided into different categories – ceremonious, martial and melancholy. Manuals, Panwaras, Jhoda and Thadya are some of the most popular folk songs in Uttarakhand. Popular musical instruments used by the people of this state include Dhol, Thali, Dholki, Turri, Damon, Tabla and Harmonium among others.

Prominent Folk Artist of Uttarakhand

The earliest of the singers who left never-ending impressions on the folk music of Uttarakhand were:

Mohan Upreti

The most famous person associated with Kumaoni Folk Music is Mohan Upreti, who is known for his Nanda Devi Jaguar & Rajula Malu Shahi Ballad. He is famous for the great Kumaoni song Bedu Pako Baro Masa which for many years has been the identity of the hills of Uttarakhand It is said that this song was also a favorite of Jawahar Lal Nehru who heard it in a band march as this song is also a popular marching song.

Shri Gopal Babu Goswami

Shri Gopal Babu Goswami who is considered to be a legend in Kumaon for his melodious voice. His songs on the life of the members of the armed forces and their families, like Kaile baje muruli, Ghughuti na basa, and many others are legendary, it is said that when these songs were transmitted on the All India Radio, women with their husbands could not help but weep when they heard the soul touching voice of Gopal Da as he was lovingly called.

Mrs. C Kandpal
T.G.T. Music

****

Wardons and House Masters with Principal Sir

Members of School Discipline Committee

Members of School Co Curricular Activities Committee

SCHOOL ACADEMIC STAFF

1	MR. BHASKARANAND PANDEY	PRINCIPAL	
2	MR.ABHIJAT AJAT SHATRU SINGH RAWAT	PGT	ENGLISH
3	MR.JAGDISH CHANDRA	PGT	HINDI
4	MR.CHETAN PRAKASH TIWARI	PGT	COMMERCE
5	MR.MUKUL KUMAR PAL	PGT	CHEMISTRY
6	MR.BHIM SINGH	PGT	HISTORY
7	MR.SANJAY SHARMA	PGT	MATHS
8	MR.RAJEEV KUMAR SAXSENA	TGT	ENGLISH
9	MRS.DISHA TRIPATHI	TGT	MATHS
10	MR.DINESH CHANDRA	TGT	ENGLISH
11	MR.KAMAN RAM	TGT	HINDI
12	MR.VISHAL MUNJAL	TGT	SCIENCE
13	MR.VINAYAK BHATT	TGT	HINDI
14	MR.RAMESH CHANDRA SANWAL	PGT	COMPUTER SCIENCE
15	MR.MANOJ DEORARI	PGT	GEOGRAPHY
16	MR.LALIT JOSHI	PGT	ECONOMICS
17	MRS.CHETNA KANDPAL JOSHI	TGT	MUSIC
18	MISS.SHALINI SINGH	PGT	BIOLOGY
19	MR.HEM CHANDRA CHAUDHARY	TGT	ART
20	MISS.RUPALI PRASAD	TGT	S.ST.
21	MR.SANJAY RAWAT	PGT	PHYSICS
22	MR.DEPENDRA SINGH KAPKOTI	TGT	MATHS
23	MISS.JYOTI PATHAK	TGT	PHE

SCHOOL SUPPORT STAFF

1. MR. RAJENDRA SINGH BISHT (OFFICE CLERK)
2. MR. KUNDAN SINGH KAPKOTI
3. MISS. RAMA NEGI
4. MR. OM PRAKASH
5. MR. BHUWAN ARYA
6. MR. K.K.GOLA
7. MR. BHAWAN SINGH BISHT
8. MR. MADAN
9. MRS. SUNITA
10. MRS. BHAWANA
11. MRS. MUNNI

राजीव गाँधी नवोदय विद्यालय

स्यात कोटाबाग, जिला नैनीताल (उत्तराखंड)